



॥ ओ३म् ॥

वेदों की ओर लौटो...

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को  
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर  
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

**महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का**

**मासिक मुखपत्र**

# वैदिक गर्जना



युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १६, अंक ६, ७ जून-जुलाई २०१६



‘निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु १’ (यजु.-२२/२२)

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म समुद्भवः ॥ (गीता-३/१४)



जब से यह यज्ञ छुटा है, भारत का भाग्य फूटा है ।  
करो फिर यज्ञ महान, क्यों सहते हो मार दुःखन की ॥



# ज्येष्ठ आर्यसेवक गौरव समारोह-लातूर



समारोह में  
मार्गदर्शन करते हुए  
प्रसिद्ध शिक्षाविद्,  
पूर्व सांसद  
डॉ. जनार्दनरावजी  
वाघमारे। मंचपर  
डॉ. दीनदयालजी व  
राठौरजी।

विचार रखते हुए लातूर  
के पूर्व विधायक श्री  
शिवाजीराव पाटील  
कहेकर।



समारोह आयोजन की  
भूमिका विशद करते  
हुए प्रान्तीय सभा के  
प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी।





महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का  
मासिक मुखपत्र



# वैदिक गर्जना

सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,११७

कलि संवत् ५११७

विक्रम संवत् २०७३

दयानन्दाब्द १९३

ज्येष्ठ/आषाढ

जून/जुलाई २०१६

प्रधान सम्पादक

मार्गदर्शक सम्पादक

सम्पादक

माधव के.देशपांडे

डॉ. ब्रह्ममुनि

डॉ. नयनकुमार आचार्य

(९८२२२९५५४५)

(९४२१९५१९०४)

(९४२१९५१९०४)

सहसम्पादक - प्रो. देवदत्त तुंगार, प्रो. ओमप्रकाश होलीकर,

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अ  
नु  
क्र  
म

हिन्दी  
विभाग

- |   |       |    |
|---|-------|----|
| १) संपादकीयम्                           | ..... | ०५ |
| २) हां ! वृष्टियज्ञ से वर्षा होती ही है | ..... | ०६ |
| ३) अष्टांग योग का महत्त्व               | ..... | १७ |
| ४) पर्जन्यवृष्टि महायज्ञों का वृत्तान्त | ..... | १९ |
| ५) शोक समाचार                           | ..... | २३ |
| ६) समाचार दर्पण                         | ..... | २४ |

मराठी  
विभाग

- |                                      |       |    |
|--------------------------------------|-------|----|
| १) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी          | ..... | २७ |
| २) पर्यावरण जपण्यासाठी - 'यज्ञ'      | ..... | २८ |
| ३) संदेश गुरुजींचा                   | ..... | ३२ |
| ४) शाहू महाराज आणि वेदोक्त प्रकरण    | ..... | ३३ |
| ५) दुरितांपासून दूर राहण्याचे उपाय   | ..... | ३५ |
| ६) गुंजोटी ऋणनिर्देश-चुकीची दुरुस्ती | ..... | ४१ |
| ७) वार्ता विशेष                      | ..... | ४२ |
| ८) शोक वार्ता                        | ..... | ४७ |

\* प्रकाशक \*

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,  
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,  
परली-वैजनाथ ४३१५१५

\* मुद्रक \*

वैदिक प्रिन्टर्स  
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा  
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु. १००/-

आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

वैदिक गर्जना \*\*\*

३

\*\*\* जून-जुलाई-२०१६



## पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ की झलकियाँ



सम्भाजीनगर के  
पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में  
सपत्नीक आहुतियाँ  
प्रदान करते हुए श्री  
जुगलकिशोर दायमा  
एवं एड.जोगेन्द्रसिंह  
चौहान।

परली-वैजनाथ के  
पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में  
सपत्नीक आहुतियाँ  
प्रदान करते हुए श्री  
जुगलकिशोर लोहिया,  
उग्रसेन राठौर,  
देविदासजी कावरे  
एवम् जयकिशोर  
दोडिया।



माजलगांव के  
पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में  
सपत्नीक आहुतियाँ  
प्रदान करते हुए  
विभिन्न मान्यवर  
तथा यज्ञ के ब्रह्मा  
व वेदपाठी।





ईश्वरप्रणित वेदज्ञान व उसके बनाये सृष्टिनियमों के विरुद्ध जब कोई कदम उठाता है, तो उसे दुःख ही दुःख भोगने पड़ते हैं। समस्याएं खड़ी होने का कारण ही शाश्वत सत्य व्यवस्था से विमुख होना या मनमानी ढंग से व्यवहार करना है। नानाविध संकटों व कष्टों से बचना हो, तो हमें ईश्वरीय सत्ता व उसके नियमों के अनुसार चलना होगा। इस दृष्टि से वैदिक विचारधारा हमें सदैव सत्यपथ पर चलने की प्रेरणा देती है। देश व काल कोई भी क्यों न हो ? वेदज्ञान की प्रासंगिकता हरहमेशा महसूस होती है और वही हमें दुःखों व पापों से बचाती है। दुनिया की सर्वकालिक समस्याएँ, जिन्होंने प्राणिसमूह को दुःख की खाई में धकेला है, उनका स्थायी समाधान केवल वेदज्ञान ही हो सकता है। गत माह ५ जून को विश्वस्तरीय पर 'पर्यावरण दिवस' और २१ जून को 'योग दिवस' मनाया गया। पर्यावरणप्रेमियों ने पेड़-पौधे लगाकर धरती को प्रदूषणमुक्त करने का संकल्प लिया, तो योगप्रेमियों ने जगह-जगह पर आसन-प्राणायाम के शिविरों में भाग लिया। दोनों घटनाओं पर दृष्टि डालें, तो यह निश्चित ज्ञात होता है कि, आज सारा विश्व योग की महत्ता को समझ रहा है। अब उसे केवल शारीरिक स्वास्थ्यलाभ तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि योग के आठ अंगों के अनुष्ठान द्वारा मानवमात्र को आत्मा से परमात्मा तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त कराना चाहिए।

आज सारा विश्व सभी प्रकार के प्रदूषण से त्रस्त है। वायु, जल, भूमि आदि तत्वों को हमने इतना दूषित कर दिया है कि ये सारे सृष्टितत्व हमारे लिए विघातक सिद्ध हो रहे हैं। कहीं पर वर्षा की अत्यधिकता, तो कहीं पर उसका पूर्णतः अभाव! पर्यावरणविशेषज्ञों को इस बात का पता नहीं है कि बदलते परिवेश में उत्पन्न समस्याओं से कैसे बचाया जा सकता है ? पर्यावरणरक्षा में 'अग्निहोत्र' ही एकमात्र उपाय है। जिसके माध्यम से हम प्रदूषण की समस्या व उससे उत्पन्न बढ़ती गरमी, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदियों से मुक्ति पा सकते हैं। लेकिन इस बात को न कोई सरकार मान्यता देती है और न ही आधुनिक पर्यावरणवादी लोग समझ सकते हैं। यज्ञ करने की बात जब की जाती है, तो उसे अनदेखा किया जाता। इसका कारण यज्ञीय विशुद्ध प्रक्रिया, वास्तविक स्वरूप व उसके अनुभूत लाभों के प्रसार का अभाव! हमारे आर्य विद्वानों के पास यज्ञीय ज्ञान-विज्ञान विद्यमान है। आवश्यकता बस इसकी है कि हम इसे समाज, शासन, आधुनिक शिक्षाविद्व चिंतकवर्ग तक पूर्ण तथ्यों के साथ कैसे पहुँचा सकते हैं ? आर्यसमाज के सामने यही सबसे बड़ी चुनौती है, जिसे हम सबको मिलकर पूरी शक्ति के साथ स्वीकारना चाहिए।

- डॉ. नयनकुमार आचार्य



# हां ! वृष्टियज्ञ से वर्षा होती ही है ।

- माधव के. देशपाण्डे (मन्त्री, महा.आर्य प्र.सभा)

महाराष्ट्र में विशेषतः मराठवाडा क्षेत्र में गत तीन वर्षों से लगातार वर्षा न्यून से न्यून होने से इस वर्ष पीने के पानी का दुर्भिक्ष हो गया। मनुष्यों और सभी प्राणियों के लिए पीने का पानी मिलना कठिन हुआ था। पानी का मूल स्रोत तो पर्जन्य ही होता है । यद्यपि वर्षा का काल २-३ महिने का होता है, किन्तु इसी काल में वर्षाद्वारा जो भी पानी मिलता है, वह पूरे वर्ष के लिए पर्याप्त होता है । अर्थात् वर्षा का पानी पृथ्वी के अन्दर जाकर सुरक्षित होता है । यही पानी हमें कुआ, तालाब, बांध, कूपनलिका के माध्यम से उपलब्ध है । किन्तु गत तीन वर्षों से वर्षा लगातार कम-कम होते हुए नहीं के समान हो गई और परिणामस्वरूप पृथ्वी के अन्दर का पानी निकालते-निकालते उसका स्तर जमीन से नीचे १००० फीट तक गया और कई जगह तो वह वहां पर भी प्राप्त नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि धरती प्यासी हो गई, नदी-नाले प्यासे हुए, ताल तलैया और कूप सूख गये । पृथ्वी के अंदर जल का अभाव होने से अन्न, वृक्ष, वनस्पति, घास, तृण आदि का पोषण होना कठिन हुआ । पशु, पक्षी, मनुष्यादि, सभी प्राणी जल से भूखे प्यासे हुए जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

इस स्थिति में जल मिले, तो कहाँ से मिले ? पश्चिम महाराष्ट्र में प्राकृतिक वर्षा कुछ अधिक होती है । इसलिए सांगली या मीरज के बांध में से पानी रेल द्वारा लातूर लाने की ऐतिहासिक घटना घटी । इसमें भी ३ करोड रुपयों से अधिक धन खर्च हुआ ।

वर्षा अथवा पर्जन्यमान कम होना, लगातार कम होना, इसके अनेक कारण हो सकते हैं । यह कारण प्राकृतिक और मनुष्यकृत भी हो सकते हैं । महत्त्वपूर्ण कारण तो स्पष्ट रूपसे उभर कर सामने आता है, तो वह है मनुष्यकृत ही। मनुष्यकृत कार्यों से ही पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है, यह आज सारे वैज्ञानिकों, तज्ज्ञों व विद्वानों का कहना है। मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण प्रचुर मात्रा में अनेक प्रकार से पर्यावरण को हानि पहुंचा रहा है । मनुष्य को छोड़ कर अन्य सारे प्राणी प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन नहीं करते । किसी ने कहा है- 'Nature can fullfil mans need, not creed' पर्यावरण का संतुलन यह एक आज विस्तृत क्षेत्र का विज्ञान बन गया है । सारी दुनिया में इस विषय पर अनेकानेक संशोधन हो रहे हैं। आज के वैज्ञानिक पर्यावरण के अंतर्गत पृथ्वी, जल

और वायु का ही विचार कर रहे हैं और इसलिए उन्हें पर्याप्त यश नहीं प्राप्त हो रहा है। क्या कारण है ?

हमारे प्राचीन ऋषियों ने अपने संशोधन, निरीक्षण से इस क्षेत्र में विस्तृत प्रयोग और अभ्यास किया है। स्पष्ट रूप से यह अंतर दिखाई देता है कि प्राचीन ऋषियों ने पर्यावरण के विषय को और दो तत्वों से जोड़ा है, वह है - 'अग्नि और आकाश।' इनमें प्रत्यक्ष रूप से अग्नि का सहयोग अति महत्वपूर्ण है। पर्यावरण प्रदूषित होने का अर्थ है पृथ्वी, जल और वायु का प्रदूषित होना। इसमें वायु का स्थान आकाश है और जल का स्थान पृथ्वी है। इन दोनों स्थानों पर अग्नि के माध्यम से प्रदूषित भागों का प्रदूषण दूर किया जा सकता है। यह सिद्धान्त हमारे प्राचीन ऋषियों ने प्रत्यक्ष प्रयोग (Practical) करके स्थापित किया था। क्रमशः हम अग्नि जल, वायु, विद्युत और आकाश विज्ञान पर विचार करेंगे।

### १) अग्नि विज्ञान :-

सृष्टि में अग्नि तत्त्व की व्यापकता, उसकी क्रियाशीलता एवं प्रत्येक कार्य के लिए उसकी उपयोगिता है। अग्नि का ज्ञान-विज्ञान सर्वत्र व्यापक है। अग्नि, पृथ्वी, अंतरिक्ष (विद्युत् के रूप में) और द्युलोक में सूर्य के रूप में विद्यमान है। उष्णता, प्रकाश और शक्ति (विद्युत) अग्नि में स्थित है। वेद की सर्वाधिक ऋचाएँ

अग्नि के विषय में हैं। अग्नि अथवा विद्युत् के माध्यम से ही दो वस्तुओं का जोड़ अथवा विभाजन होता है।

ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही अग्नि को 'ऋत्विजम्' कहा है। अर्थात् ऋतुओं का संचालक अग्नि ही है। अग्नि, विद्युत एवं सूर्य इनके माध्यम से यज्ञ द्वारा वृष्टि अथवा पर्जन्य के ऋतु का निर्माण किया जा सकता है। अग्नि के माध्यम से क्रिया करना और उससे सृष्टि तत्वों का उपभोग लेना भौतिक यज्ञ ही है।

### \* अग्नि दूत है -

यजुर्वेद (२२-१७) में कहा है - 'अग्निदूतं पुरो दधे...।' अखिल ब्रह्माण्ड का दूत अग्नि है। क्योंकि उसकी पहुंच सृष्टि में सर्वत्र है। सर्वत्र गति करने का सामर्थ्य अग्नि में ही है। आकाश में जाकर वृष्टि (पर्जन्य) के लिए यथोचित वातावरण का निर्माण करने में अग्नि सहाय्यक होता है। अग्नि का अर्थ ही 'सर्वाधिक गतिवाला' है। अग्नि का अर्थ 'संगतिकरण' भी होता है। सर्वत्र व्यापक होने से उसकी शक्ति भी विस्तृत होती है। अग्नि को 'वह्नि' भी कहते हैं। अर्थात् 'वहति प्रापयति' जो किसी को ले जाती है। अर्थात् अग्नि में जो भी पदार्थ डाला जाता है, उसे वह द्विगुणित करके फैलाती है, वह दूर तक ले जाती है।

अग्नि तत्त्व को 'पवमान' भी कहा



है। ब्रह्माण्ड में वायुतत्त्व भी पवमान है। जल तत्त्व भी पवमान है, सोम तत्त्व भी पवमान है। पवमान को बहती हुई धारा या लहरों के सदृश्य गति करता हुआ, चलता हुआ व स्पंदनशील बताया है। ऋग्वेद (१.२३.२) में कहा है - 'जिन विद्युत, विद्युत्प्रवाह एवं वायुओं का यज्ञ से हम निर्माण करते हैं, वे द्युलोक को स्पर्श करती है, अर्थात् वहाँ तक पहुंचती है।

## २) जल विज्ञान :-

जब हम पर्जन्य (वर्षा) पर विचार करते हैं, तो हमें इस प्रक्रिया में भाग लेनेवाले अग्नि तत्त्व, जल तत्त्व, वायु तत्त्व एवं आकाश तत्त्व के विज्ञान को समझना होगा। जल तत्त्व और पृथ्वी तत्त्व पर आज के विज्ञान ने प्रचुर मात्रा में विचार किया है। फिर भी वैदिक पर्जन्य वृष्टि यज्ञ की प्रक्रिया समझने के लिए जलविज्ञान को जानना होगा। अग्नि ऊर्ध्व गमनशील है और जल अधोगमनशील है। पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में इन्हीं गुणों का उपयोग किया है। अग्नि को अंतरिक्ष / द्युलोक में प्रवाहित करके आकाशस्थ (जिसे वेदों ने समुद्र कहा है) जल को जलरूप देकर पृथ्वीपर बरसाने की क्रिया की जाती है। यजुर्वेद (१३.३१) में कहा है - "त्रीन् समुद्रान् समसृपत स्वर्गानपां पतिवृषभ इष्टकानाम् ॥" अर्थात् जल उपर, नीचे और मध्य में रहनेवाले समुद्र से प्राप्त होता है। 'समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः।' अर्थात् समुद्र जल

के स्रोतों का अधिपति है। यज्ञप्रक्रिया के इसी स्रोत से "निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु।" हम अपनी इच्छानुसार पर्जन्य/ वर्षा कर सकते हैं। (यजु. २२.२१) इसे समझने के लिए हम यह कह सकते हैं -

१) यदि पृथ्वीपर समुद्र ना हो, तो पृथ्वी के जल के सारे स्रोत शुष्क हो जाते हैं।

२) यदि अंतरिक्ष में समुद्र ना हो तो वृष्टि, मेघ और पृथ्वी के जल प्रपात, झरने, नदी, तालाब, कृषि, हिमाच्छादित पर्वत आदि सारे समाप्त हो जाते हैं।

३) यदि द्युलोकस्थ समुद्र ना हो एवं सूर्यमंडल के चारों ओर का अर्णव रूप समुद्र ना हो तो, कालचक्र का संवत्सरात्मक जीवनक्रम, जीवन-सामर्थ्य नष्ट हो जावे।

सूर्य के चारों ओर वरुण तत्त्व -

ऋग्वेद के १.२४.८ इस मंत्र में वरुण तत्त्व एक वायु है, जो राजा है। जैसे राजा सर्वोपरि होता है, दीप्तिमान् होता है, इसी वरुण को 'अपामधिपतिः' (अथर्व ५.२४.४) जलों का स्वामी कहा है तथा 'मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपति।' (अथर्व ५.२४.५) अर्थात् मित्र और वरुण वृष्टि के अधिपति हैं। वरुण का संबंध जलों का निर्माण करनेवाले तत्त्व से है।

इसी वरुण तत्त्व को उद्रजन=हाईड्रोजन कहते हैं। इसी वरुण को उदान भी कहते हैं। क्योंकि वह ऊपर की ओर गति करनेवाला है। सबसे हलका होने से उदान है। अतः राजा बनकर सब



के उपर विराजमान है । सारी वायु में हाईड्रोजन वायु ही सबसे हल्की है । इस मंत्र में कहा गया है कि वरुण तत्त्व, उदान, हाईड्रोजन ही सूर्य को मार्ग देता है । अर्थात् सूर्य के चारों ओर हाईड्रोजन गैस रूप में है, उससे अपने तेज से बना रहता है । इसी कारण वरुण का प्रकाश से भी संबंध है ।

**जल का निर्माण कैसे होता है ?**

जब-जब हम इच्छा करते हैं, तब-तब यज्ञादि द्वारा वर्षा हो, ऐसा उपदेश वेद द्वारा निश्चयपूर्वक प्राप्त होता है । अर्थात् वर्षा किस प्रकार होती है ? किस प्रकार जल का निर्माण होता है ? इसका ज्ञान हमें आवश्यक है । यजुर्वेद (१०.१) में कहा है- “विद्वान् लोग (वैज्ञानिक) जिन क्रियाओं से मित्र और वरुण को अच्छी प्रकार से सिंचित करने के लिए विद्युत् को संयुक्त करते हैं और चैतन्यमय जलों को प्राप्त करते हैं।” (कृपया गुगल पर  $H_2O$  का विश्लेषण देखें।) इस मंत्र से स्पष्ट है कि, मित्र और वरुण को संयुक्त करने के लिए बिजली का प्रयोग करके मधुर एवं उत्तम जलों को प्राप्त किया जाता है । इस प्रकार इन दोनों तत्त्वों को जोड़कर अग्नि की प्रक्रिया से संयुक्त करते हैं । किसलिए ? ‘धृताचीं साधन्ता’ - जल बनने की क्रिया सिद्ध करने के लिए!

इस मंत्र में जिस मित्र तत्व का वर्णन है, वह प्राण तत्व है । जो कि सर्वत्र न्यूनाधिक

प्रमाण में सृष्टि में व्याप्त है । सबका प्राण होने से वह सबका मित्र है । वरुण तत्त्व उदान तत्त्व हैं । क्योंकि ‘उत्रयनादुदानः’ उपर ले जानेवाला होने से ‘उदान’ है । यही उदान वरुण तत्त्व है । इसी वरुण को वेद में ‘वरुणोऽपामधिपतिः।’ (अथर्व ५.२४.४) जलों का स्वामी कहा है । अतः जलों का अधिपति होने से जलों का मूल रूप से जनक भी है । अर्थात् जल के अणु मित्र और वरुण हैं, यह वेदों में स्पष्ट रूप से कहा है । आधुनिक विज्ञान भी जल को  $H_2O$  कहा है। ‘हाईड्रोजन व ऑक्सीजन का संयोग जल है’ यह संशोधन हेनरी कैव्हेन्डीश ने और  $H_2O$  फॉर्मूले का शोध सन १८११ में इटालियन शास्त्रज्ञ अर्मैडिओ ने किया।

**यजा नो मित्रवरुणा यजा देवाँऽश्नतं बृहत् ॥ (यजु.३३.३)**

अर्थात् ‘हे अग्नि ! हमारे मित्र एवं वरुण तत्त्वों की संगति कीजिए । महान् जल के निर्माण के लिए विद्वानों को (वैज्ञानिकों को) प्राप्त कराइएगा।’ तात्पर्य यह है कि जब जल मित्र और वरुण की दशा में विलीन हो जाता है, तब उसको सृष्टि प्रक्रिया में जल का रूप धारण करने से पूर्व सोम रूप में (वनस्पतिजन्य) आना पड़ता है । (यजु.७.९) पुनः सोम से जल की उत्पत्ति होती है । वह सोम पर्वतो में (हिमाच्छादित जंगल) अंतरिक्ष में, वृक्षों



के समूह में, वनों में, वनस्पति औषधियों में आता है। इनमें भर जाता है। जहाँ सोम पदार्थ भरा रहता है, वहाँ वर्षा होती है और जीवनी तत्त्व प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसलिए वर्षा के होने में वनस्पति, औषधि, पेड़, पौधे, वनक्षेत्र का होना आवश्यक समझा गया है।

### ३) वृष्टि विज्ञान :-

वृष्टि विज्ञान भी वेद का एक प्रमुख विषय है। “निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु।” अर्थात् हम अपनी इच्छानुसार वर्षा पर नियंत्रण करके पृथ्वी को धन धान्य से पूर्ण व सुखी कर सकते हैं और अतिवृष्टि से होनेवाली बाढ़ आदि से धन एवं जन-हानि से बच सकते हैं। तथा असमय की वृष्टि के निवारण द्वारा कृषि को हानि से मुक्त कर सकते हैं। वैदिक वृष्टि विज्ञान इस कार्य में बहु परीक्षित, प्राचीन काल से अब तक व्यवहारसिद्ध है। मेघों के न होने पर भी यज्ञ द्वारा मेघों का निर्माण भी होता है। और उनको बरसाया भी जाता है।

आधुनिक भौतिक विज्ञान मेघों की उपस्थिति होगी, तभी उन्हें बरसाने की क्रिया कर सकता है और उसमें भी उसकी यशस्विता का भाग ५०% से भी कम होता है। मेघों की अनुपस्थिति में भौतिक विज्ञान कृत्रिम वर्षा कराने में निष्फल है और अतिवृष्टि रोकने का अथवा असमय की वर्षा रोकने का विचार भी आधुनिक विज्ञान

ने अभी तक नहीं किया है।

**ब्रह्माण्ड के चारों ओर समुद्र है -**

पृथ्वी के उपर मध्यभाग में, अंतरिक्ष में भी समुद्र है और सृष्टि के स्थूल भाग में भी (पृथ्वीपर) समुद्र है। अंतरिक्ष में जो समुद्र है, उसकी रचना में, उससे उपर के जल और पृथ्वीस्थ जल दोनों को संमिश्रण होता रहता है। अंतरिक्ष के उपर के जल जब तक अंतरिक्ष में आते रहते हैं, तब तक अंतरिक्ष दृश्यमान नहीं होता। परन्तु जब पृथ्वीस्थ समुद्र के जल को वे आकर्षित करके पर्जन्य एवं मेघरूप में होकर मंडराने लगते हैं, तब अंतरिक्षस्थ समुद्र स्थूल रूप में प्रकट होने लगता है या दृश्यमान होता है, परन्तु जब गुरुत्व के कारण उन जलों की पृथ्वी पर पतन की क्रिया प्रारम्भ होने लगती है, तब पर्जन्य वृष्टि होती है।

“मधुवाता ऋतायते...माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥”(यजु.१३.२७ से २९)

इन मन्त्रों में सर्वत्र मधुरता का वर्णन है। उस समय वायु मधुर रस बहती है, नदियाँ मधुर रस बहाती हैं, औषधियाँ भी मधुर रस बहाती हैं। दिन और रात मधुर होते हैं, पृथ्वीलोक, द्युलोक मधुर होता है, वृक्ष वनस्पति मधुर बन जाती हैं। सूर्य की किरणें (गौएं) भी मधुरता सम्पादन करनेवाली होती हैं अर्थात् इस पृथ्वी को यज्ञीय जल से अच्छी प्रकार चारों ओर से



आवृत्त कर दो । यजुर्वेद कहता है यह प्रक्रिया केवल यज्ञ के द्वारा ही हो सकती है।

**वर्षा ते अग्निरिषितो अरोहत्।**

अर्थात् यज्ञीय जलों को बनाने के लिए अग्नि का प्रयोग करना पड़ता है । इस प्रकार यज्ञ प्रक्रिया से जलों को कामनानुकुल संस्कारित करके अनुकूल वृष्टि कराई जा सकती है ।

महर्षि दयानन्द के 'वेदों की ओर लौटों।' इस उद्घोष के बाद हमारे वैदिक विद्वानों ने अभी यज्ञप्रक्रिया से अत्यंत अल्प व्यय में पर्जन्य वृष्टि के यशस्वी प्रयोग किये हैं। पर्जन्य वृष्टि यज्ञ का लोक कल्याणकारी आयोजन ही श्रेष्ठतम कर्म है । यही परमश्रेष्ठ साधन है । इस श्रेष्ठतम कर्म के लिए परम अंतिम साधन है - 'यज्ञ' और यही यज्ञ विश्व की नाभि है । इस नाभि में 'आस्मिन्हव्या जुहोतन।' (यजु.३.१) घृतादि तथा आवश्यकतानुसार अन्य हवि का प्रयोग विश्व कल्याणार्थ करना चाहिए। कौन सी हवि, कैसी एवं किसी समिधाएँ, किस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयुक्त की जानी चाहिए? जो इस रहस्य को जितना जानेगा, वह माध्वी-विद्या को उतनाही सफलता से कर सकेगा ।

**घृत अमृत की नाभि -**

यजुर्वेद के सत्रहवें अध्याय के ८९ वे मन्त्र में घृत को अमृत के नाभि की उपमा

दी है । घृत का गुप्त नाम देवों की जिह्वा और अमृत की नाभि है । जिस प्रकार हमारी जिह्वा, हमारे शरीर के लिए पोषकतत्त्वों को देती है, उसी प्रकार सृष्टि के विविध तत्त्वों को उनका पोषक, तृप्तिकारक प्राण एवं जीवनदायक खाद्य अग्नि के द्वारा प्राप्त हो जाता है । अतः यज्ञाग्नि में घृत एवं द्रव्यों को होम करना इस क्रिया को जो लोग 'अमूल्य वस्तुओं को नष्ट करना है', ऐसा समझते हैं, उनकी यह गलत धारणा है । वास्तव में वह नष्ट नहीं होता, अपितु महान फलदायक होता है ।

जिस प्रकार किसान को अपने खेत में अमूल्य बीज फेंकता देखकर कोई कहें कि यह बीजों को नष्ट कर रहा है, तो उसे आप क्या कहोगे ? इसी प्रकार यज्ञों में कोई भी वस्तु नष्ट नहीं होती । अपितु इनसे विश्व के अन्य तत्त्वों की पुष्टि होती है, यह सुनिश्चित है । इसी प्रकार विश्व में व्याप्त अग्नि यह जल, वायु, सूर्य एवं चंद्र की रश्मियों के माध्यम से विश्व के तत्त्वों को पुष्ट करता है, जैसे कि गर्भ के बालक का भरण पोषण नाभि के माध्यम से होता है । इसलिए विश्व का भरणपोषण करनेवाला यज्ञ ही है । यह प्रक्रिया पूर्ण रूप से वैज्ञानिक एवं लाभप्रद है ।

**“विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व ॥”**

(यजु.१५.६॥)



अर्थात् वृष्टि की विष्टम्भन विद्या से वृष्टि को नियंत्रित करो । अतः वेद वर्षा कराने और रोकने इन दोनों प्रकार की विद्या का संकेत करता है । केवल प्रकृति के स्वाभाविक रूप से होनेवाले (अवर्षण और अतिवर्षा) कार्यों पर आश्रित होकर नहीं बैठे रहना चाहिए । अपितु प्रकृति के गुण व कर्मों को जानकर इच्छानुसार कार्यसिद्ध करने चाहिए ।

हजारों वर्षों के उपरान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा, “वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।” विगत पांच हजार वर्षों में भारत में ऋषि, महर्षि, आचार्य, महामंडलेश्वर, पीठाधीश्वर व वेदों के महान भाष्यकार हुए, किन्तु किसी ने यह नहीं कहा कि ‘वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ।’ दयानन्द के विद्वान शिष्यों ने वेदाभ्यास करके, “यज्ञ से वृष्टि” कराने की विद्या प्राप्त की और इसमें प्रात्यक्षिक करके यश भी प्राप्त किया । इस विषय में वेदों में क्या लिखा है ? यजुर्वेद में कहा -

“अपां त्वा क्षये सादयामि,

अपां त्वा योनौ सादयामि।

अपां त्वा ज्योतिषि सादयामि,

विद्युद्वा अपां ज्योतिः।”

अर्थात् ‘मैं जलों को उनके निवासस्थान में स्थापित करता हूं ।’ यह

निवासस्थान अथवा मूल रूप में स्थापित करने की क्रिया अर्थात् प्रयोग किया जा रहा है । योनि याने जन्मस्थान अर्थात् जल के कारण रूप (जैसे  $H_2O$ ) के साथ प्रयोग किया जा रहा है । जिसे वेदों में मित्र और वरुण नाम से जाना जाता है । आगे लिखा है-‘जलों को विद्युत् के संयोग से स्थापित किया जाता है । विद्युत् ही जलों की ज्योति है।’ अर्थात् विद्युत् क्रिया से जलों को फाडकर मूल प्रकृति मित्र और वरुण में स्थापना हो सकती है। आगे कहा है - ‘वृष्टि कराने के लिए जलों को वायु में स्थापित करता हूं।’ यह विज्ञान मानसून के निर्माण की नैसर्गिक प्रक्रिया है । इसे भी आप मानसून गुगल पर देख सकते हैं । लिए औषधियों के योग से उनकी धारक शक्ति बढ़ाई जा सकती है । जिससे जलों को बादलों में परिवर्तित करने के लिए जलों को अग्नि, तेज, तपन आदि क्रिया करनी चाहिए। Formation of Mansoon यज्ञ से निर्मित धूम निर्माण होगा और वह वायु मार्ग से अंतरिक्ष में जाकर मेघों का निर्माण करेगा । इस प्रकार यज्ञों द्वारा मेघों का निर्माण होने से वर्षा हो सकती है ।

जल के मूल मित्रावरुण का प्रमाण-

“वेद सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं”

का प्रमाण इस प्रक्रिया में स्पष्ट होगा । इन



दोनों का परस्पर क्या भाग है, जिससे अंतरिक्ष में जल निर्माण होकर वर्षणक्रिया होती है। मित्रस्यभागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं दिवो वृष्टिर्वात स्पृतऽ एकविंश स्तोमः॥

(यजु. १४. २४)

इसमें मित्र और वरुण का परस्पर अनुपात क्या होता है, इसका स्पष्टिकरण है। इसमें 'वरुणस्याधिपत्यम्।' वरुण का अधिपत्य है, क्योंकि उसका भाग अधिक है। मित्र तत्व की प्रभुता नहीं है, क्योंकि उसका परिणाम कम है। फिर भी उसका जो भी परिणाम हो, वह आवश्यक है। बिना मित्र के वरुण जल बनाने में असमर्थ है। 'मित्रस्य भागोऽसि।' सृष्टि-यज्ञ में मैत्रावरुण ग्रह द्वारा जल निर्माण में यह स्तोम इन दो तत्वों का समूह "एकविंश" के समूह का ज्ञापक है। स्तोम समूह को कहते हैं। दोनों का समूह २ और एक से बने एकविंश (२१) के रूप में अर्थात् (२:१) के अनुपात में विभक्त करने पर  $१४:७ = २:१$  होते हैं। १४ संख्या ७ से २ बार विभाजित होने पर भी २:१ का स्तोम सम्मुख रह जाता है। इससे पहले हमने यह देखा है कि मित्र = ऑक्सीजन और वरुण = हाईड्रोजन।

इस मित्र और वरुण के २:१ के अनुपात में सम्पर्क कराने से जल प्राप्त होता है। अर्थात् जल जल का भार अधिक हो जाता है और वायु का भार कम

हो जाता है तो वृष्टि होती है।

किस तत्व से मित्र प्राप्त किया जा सकता है और किससे वरुण तत्व प्राप्त किया जा सकता है? यदि इसका उचित ज्ञान हो गया, तो वर्षा कराने और रोकने के कार्य में सहाय्यता प्राप्त हो सकती है। एक पदार्थ में रहनेवाले एक तत्व को निकालना और दूसरे से संयोग करना यह अग्नि के माध्यम से होता है। अतः अग्नि में इनका आहुतिरूप में प्रयोग करके वर्षा कराना तर्क एवं विज्ञान सम्मत कार्य है। यह आहुति वायु मार्ग से अंतरिक्ष और ध्रुलोक तक पहुँचती है और वहाँ पर अपने अनुकूल तत्वों में मिश्रित होकर परिमाण में वृद्धि करने में सामर्थ्य रखती है। इसी क्रिया को यज्ञ द्वारा उचित प्रकार से किया जाता है। इसलिए वेद में कहा है "यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्॥" (यजु. ३३. ३) महान् जलों के निर्माण के लिए मित्र और वरुण के साथ हे अग्नि ! आप संगत करो !

४) याज्ञिक (वृष्टि)विज्ञान :-

यज्ञ से मेघों का निर्माण होता है और मेघों से वृष्टि होती है, यह प्रत्यक्ष और शाश्वत सत्य है, उतना ही "यज्ञात् भवति पर्जन्यः।" यह भी शाश्वत सत्य है। बादल न होने पर भी वर्षा नहीं होती, तो भी यह कोई नहीं कह सकता कि यह



असत्य सिद्धान्त है। इसी प्रकार यज्ञ से बादल उत्पन्न न भी हो, तो भी यह सिद्धान्त असत्य नहीं ठहर सकता। बादलों के निर्माण में यज्ञ का अन्तरिक्ष में जितनी मात्रा में विस्तार एवं सामर्थ्य प्रसारित होना चाहिए, उतनी मात्रा में न होने से मेघों का निर्माण नहीं होगा। सृष्टि में एक यज्ञचक्र अविरत चल रहा है, उससे मेघों का निर्माण होता है। यह एक नैसर्गिक (प्राकृतिक) प्रक्रिया है। परंतु उसी यज्ञ चक्र एवं सिद्धान्त के आधार पर यदि हम भी अपने अपने मर्यादित क्षेत्र में यज्ञ का आयोजन करें, तो उससे मेघों का निर्माण होता है और उस यज्ञ से वर्षा भी होती है। अतः वेद ने यज्ञ को “वर्ष वृद्धमसि” (यजु.१-१६) वर्षा की वृद्धि करनेवाला कहा है।

**\* आहुति से वर्षा का सम्बन्ध :-**

यज्ञ से वर्षा होने के प्रसंग में अनेक महत्वपूर्ण संकेत हमें वेदमंत्रों से प्राप्त होते हैं। यजु.१-२५ में “वज्रं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु” अर्थात् जिस यज्ञ का हम अनुष्ठान करते हैं, वह मेघ मंडल में जाकर पृथ्वी के स्थान विशेष स्थान पर वर्षा करता है। इसमें यज्ञ की आहुति का मेघमंडल में गमन होने की क्रिया से वर्षा का संबंध बताया है। इसी प्रकार यजु.०२-१६ में कहा है, “यज्ञ की अग्नि में हम जो आहुति देते हैं, वह वायुमार्ग से गमन करती है और अंतरिक्ष

स्थान में से द्युलोक तक पहुंचती है। और पुनः द्युलोक से वह वृष्टि को लाती है। पूर्व मंत्र में यज्ञ का मेघमंडल से सम्पर्क हो कर वर्षा कराना और दूसरे मंत्र में मेघ न होने पर यज्ञ की आहुति का द्युलोक तक पहुंच कर वहाँ से वृष्टि का हेतु बनना बताया है। अर्थात् दोनों मंत्रों में यज्ञ की आहुति का वर्षा करने से पूर्ण सम्बन्ध है। अतः **निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु॥** (यजु.२२-२२) अर्थात् इच्छानुसार वर्षा होने से यह सिद्ध होता है।

**\* अग्नि का वायुमंडल पर प्रभाव:-**

यज्ञ प्रारंभ होते ही सबसे प्रथम प्रभाव वायु के तापमान पर पड़ता है। यज्ञ स्थान की वायु में उष्मा की वृद्धि होती है और उससे वह वायु नीचे से उपर की ओर गति करती है। जब नीचे की वायु ऊपर जाती है, तो नीचे के खाली स्थान में आस-पास की वायु प्रवेश करने लगती है। वायु में उष्णता से प्रसारण क्रिया होती है। प्रसारण से घनत्वस की न्यूनता तथा उससे अपेक्षाकृत भार की न्यूनता होने से वह वायु उपर की ओर गतिशील हो जाता है। इस कारण से यज्ञाग्नि की निरन्तर क्रिया से पृथ्वी से अंतरिक्ष तक वायु की ऊर्ध्व शीर्ष गति लंबरूप में प्रारंभ हो जाती है। यह गति अनुमानतः प्रारम्भ में एक घण्टे में २० कि.मी. की गति से होकर उत्तरोत्तर गति में न्यूनता प्राप्त



करती जाती है। इसी कारण से उपर की वायु इसी मार्ग से नीचे की ओर आती है। इस प्रकार यज्ञ स्थली पर वायुमंडल में एक विशाल वायु-चक्र चलने लगता है और यज्ञ में प्रयुक्त आहुति (घृत मिश्रित और घृत की बाष्प) द्रव्यों को बाष्प धूम एवं सूक्ष्म अंश युक्त परमाणुओं से वह स्थान पूरी होता है और क्रमशः अपने समीप के क्षेत्र को भी प्रभावित करता है। इस निरन्तर वायु चक्र की प्रक्रिया से यह क्षेत्र उत्सरोत्तर बढ़ता जाता है। तापमान की वृद्धि के कारण वायु जल के बाष्प को आत्मसात करके उसकी धारणा शक्ति बढ़ जाती है और उपर की आर्द्रता को नीचे आकर्षित करने में समर्थ हो जाती है। जितना यज्ञीय तापमान बढ़ता जाता है, उतना वायु को जल धारण करने का सामर्थ्य बढ़ जाता है। घृत का बाष्परूप ऊपर अंतरिक्ष के तापमान की तुलना से कम होने से वायुजल को आकर्षित कर घनता बढ़ गयी है और भार अधिक होने से वर्षा हो जाती है।

अग्नि प्रदीप्त करने मात्र से, वातावरण में गति होने से ही वर्षा नहीं होती, अपितु उसके साथ-साथ उस बाष्प में घनत्व (Density), गुरुत्व (भार), आर्द्रता, सान्द्रता, तरलत्व एवं हिमत्व सामर्थ्य उत्पन्न कराने के लिए घृतादि सदृश्य पदार्थ तथा अन्य द्रव्यों की भी आवश्यकता रहती है। रेल, कारखाने एवं मोटर-कारों के धुओं में

मेघ उत्पत्ति अथवा उसमें घनत्व तथा जमने का सामर्थ्य उत्पन्न नहीं होता। यह क्रिया इच्छित अवसर पर वर्षा कराने के लिए यज्ञ में प्रयुक्त घृत एवं औषधियुक्त जड़ीबुटी सहित द्रव्य पदार्थों से ही होती है। इसलिए वेदने कहा है-‘घृतेन द्यावा-पृथिवी पूर्वैथाम् ॥’ (यजु.५-२८) अर्थात् हे यज्ञ! तुम द्युलोक और पृथिवी का घृताहुति से पूर्ण कर दो।

वृष्टि यज्ञ में आकाश की स्थिति एवं ऋतु की स्थिति को देख कर उसमें किस स्थान पर क्या क्रिया करनी है, यह निदान करके आहुति के लिए आवश्यक एवं छन्दों का उचित रीति से समुचित मात्रा में विनियोग करने से सफलता प्राप्त होती है। वर्षा यज्ञ में द्रव्य, ऋतु एवं छंद विज्ञान का यथोचित ज्ञान आवश्यक है।

५) अभियांत्रिकी पर्जन्य विज्ञान :-

आधुनिक भौतिकी, अभियांत्रिकी विज्ञान में पर्जन्य का जो विज्ञान है, उसे हायड्रोलॉजी कहते हैं। इसी विषय को विस्तृत रूप से उसके अंग प्रत्यंग को स्पष्ट करनेवाला मंत्र यजुर्वेद (१६-३८) का है- ‘नमः कूप्याय चाऽवट्याय च नमो विघ्नयाय चाऽतप्याय च।

नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्षाय चाऽवर्षाय च ॥’

इस मंत्र में जलविद्या को जाननेवाले (अभियंता) और उसके सम्पादनकर्ताओं



की विविध आठ श्रेणियों के व्यक्तियों के लिए आदर सत्कार या नमस्कार भाव प्रकट करने का आदेश दिया है। क्योंकि इन आठ प्रकार के व्यक्तियों के लिए आदर सत्कार न किया, तो वे राष्ट्र में नहीं रहेंगे और परिणाम स्वरूप जल के अभाव की पूर्ति विविध प्रकार से सम्भव नहीं होगी।

आज भी हमारे देश में इन विभागों के लिए विविध प्रकार के प्रतिभा सम्पन्न कुशल वैज्ञानिकों की (अभियंताओं की) आवश्यकता है। इसके लिए शासन स्तर पर और संस्थाओं की ओर से अभियांत्रिकी महाविद्यालय खोले जा रहे हैं। इन आठ प्रकार के व्यक्तियों को जल की समस्या हल करने के लिए सन्मानित किया है। वर्तमान स्थिति में भी इनका राष्ट्रीय स्तर पर सन्मान किया जाना चाहिए।

- १) कूप्याय = कूप निर्माण में कुशल
- २) अवट्याय = जलगर्त निर्माण कार्य (डैम, बांध, जलाशय) में कुशल
- ३) विध्रयाय = अवर्षण शील पर्जन्य, अभ्र विज्ञान में कुशल
- ४) आतप्याय = आतप (आकाश में पर्जन्य तापमान) विज्ञान में कुशल
- ५) मेघ्याय = वर्षणशील मेघों के निर्माण विज्ञान में कुशल
- ६) विद्युत्याय = वर्षा निर्मित विद्युत में कुशल
- ७) वर्षाय = वर्षा कराने में कुशल
- ८) अवर्षाय = वर्षा को रोकने के कार्य में

कुशल व्यक्ति

इस प्रकार हमने पर्जन्य, वृष्टि, जल विज्ञान, अग्निविज्ञान, वायु-आकाश, पृथ्वीस्थ जल इन सबके माध्यम से जल प्राप्ति 'निकामे-निकामे' अर्थात् इच्छानुसार, जब चाहे जब ना चाहे, हो सके इसके विस्तृत संदर्भ वेदों के माध्यम से जानने का प्रयत्न किया। म.दयानन्द के वचन के अनुसार 'वेद सब सत्यविद्या के पुस्तक है' इसको ध्यान में रखकर आर्य वैज्ञानिकों ने यज्ञ के माध्यम से वृष्टि कराने की विद्या प्राप्त की है और इसमें यश भी प्राप्त किया है। यह प्रक्रिया अति सरल और विज्ञानयुक्त है और इसके साथ ही आधुनिक कृत्रिम पर्जन्य प्रक्रिया की तुलना में अत्यंत कम व्यय में पूर्ण हो सकती है।

- रो हाऊस क्र.३, साई एवहेन्यू,

पिम्पळे सौदागर, पुणे-२७

मो.९८२२२९५४५

नेपाळमध्ये आर्य महासंमेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली व नेपाळ आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे येत्या दि.२०,२१ व २२ ऑक्टोबर २०१६ रोजी नेपाळची राजधानी काठमांडू येथे आंतरराष्ट्रीय आर्य महासंमेलनाचे आयोजन करण्यात आले आहे. तरी सहभागी होऊ इच्छिणाऱ्यांनी महाराष्ट्र सभेचे मंत्री श्री माधवराव देशपांडे (९८२२२९५४५) यांच्याशी संपर्क करावा.



## अष्टांग योग का महत्व

— प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में योग के आठ अंग बताये हैं — १. यम २. नियम ३. आसन ४. प्राणायाम ५. प्रत्याहार ६. धारणा ७. ध्यान और ८. समाधि । इनमें प्रथम चार यम, नियम, आसन और प्राणायाम—बहिरंग योग कहलाते हैं। अन्त के चार प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अन्तरंग योग हैं। यम पाँच प्रकार के होते हैं —

“अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः॥”

अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) मन, कर्म वचन से चोरीत्याग (ब्रह्मचर्य) उपस्थेन्द्रिय का संयम, (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता, स्वत्वाभिमानरहित होना इन पाँच यमों का सेवन सदा करें। नियम भी पाँच प्रकार हैं—

“शौचसन्तोषतपः स्वाध्याय

ईश्वरप्रणिधानानि नियमाः॥”

अर्थात् (शौच) स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्धम रहना सन्तोष नहीं, किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि-लाभ में हर्ष वा शोक न करना, (तपः) अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान, (स्वाध्याय)

पढना-पढाना, (ईश्वरप्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पाँच नियम कहते हैं। यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करे। जो यमों को सेवन छोड़ के केवल नियमों का सेवन करता है, वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता, किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है। इस तथ्य के समर्थन में निम्नलिखित मनुस्मृति (४/२०४) का श्लोक देखने योग्य है—

“यमान् सेवेत सततं

न नियमान् केवलान् बुधः।

यमापतत्यकुर्वाणो

नियमान् केवलान् भजन् ।”

यम और नियम जीवन जीने के महत्वपूर्ण अंग हैं, इनके अभाव में योग की साधना असम्भव है। यहाँ एक और सच्चाई ध्यान में रखनी चाहिये कि सदाचारी गृहस्थ भी योग की साधना आराम से कर सकता है।

योग का तीसरा अंग है—‘आसन!’ योगदर्शन का सूत्र है—‘स्थिरसुखमासनम्’ योगसाधना के लिये लम्बे समय तक स्थिर होकर सुखपूर्वक बैठना। योगसाधना के लिये मुख्य रूप से सिद्धासन, पद्मासन व सुखासन बताये जाते हैं। आसन के सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि दोनों पुष्टे समान रूप से आसन पर स्थित हों, कमर में जहाँ



त्रिकास्थि हैं, वहाँ से मेरुदण्ड गर्दन तक सीधा रहे। इससे इडा, पिंगला और सुषुम्णा तीनों नाडियाँ खुली रहें और प्राणों का आवागमन होता रहे। साधना के लिये इतना ही आसन पर्याप्त है।

योग का चतुर्थ अंग है 'प्राणायाम।' प्राणायाम में प्राणों को श्वास से दोनों नथुनों से बाहर निकालकर रोकना वायु और मूल को संकुचित करना लाभकारी है। अधिक देर बाह्यवृत्ति अर्थात् बाहर रोकना उत्तम है। स्वाभाविक रूप से श्वास अन्दर लेकर थोड़ा रोककर फिर बाहर रोकना मूल पायु का संकोच करना लाभकारी है। इससे इडा, पिंगला और सुषुम्णा तीनों खुलकर सक्रिय हो जाती हैं और साधना में सहयोग मिलता है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम ये चारों बहिरंग हैं। प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये चारों अन्तरंग हैं। प्रत्याहार का अर्थ है कि बहिर्मुखी बनाया है, इसीलिये वे बाहर के विषयों को वासना से ग्रहण कर लेती हैं। उन्हें अन्तर्मुखी करके परमेश्वर के गुण, चिन्तन में लगाना प्रत्याहार है। इसीलिये योगसाधना के समय आँखे अधखुली बन्द कर लेते हैं। कई लोग कानों में रूई का फूहा भी लगा लेते हैं। इससे बाहर के दृश्य, शब्द आदि नहीं सुनायी पड़ते। अन्तरंग योग का द्वितीय साधन "धारणा" है। धारणा की परिभाषा

है - 'देशबन्धचित्तस्य धारणा।' चित्त को किसी एक स्थान पर बांध देना। कई लोग दीपक की लौ पर भी धारणा करते हैं। किन्तु परमेश्वर की धारणा के लिये हृदय पुण्डरीक - दोनों छातियों के बीच में खाली जगह पर, नासिकाग्र दोनों भौहों के बीच में आज्ञा चक्र पर (जहाँ पिट्यूटरी ग्लेण्ड्स) और सिर में सहस्रार (जहाँ खोपड़ी में पिलपिला है) उत्तम स्थान है।

इसके पश्चात् ध्यान का क्रम आता है। योगदर्शन में कहा है - "तत्रैकतानता ध्यानम्।" धारणा को एकरस बनाये रखना, कोई विच्छेद न होने देना ध्यान है। ध्यान में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहना उचित है। इसका पूर्ण अभ्यास हो जाने पर समाधि लग जाती है। समाधि में वह सब कुछ भूल जाता है। ध्यान करनेवाला अपने को भूल जाता है, 'मैं ध्यान कर रहा हूँ' यह भी भूल जाता है। केवल परमेश्वर का चिन्तन मात्र ही ध्यान में रह जाता है। समाधि भी सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात दो तरह की होती है। यह साधना का ऊँचा विषय है। योग साधना में समाधि तक पहुँचना अनेक जन्मों में सिद्ध हो पाता है।

- "ईशावास्यम्", पी-३०,  
कालिन्दी हाऊसिंग स्टेट,  
कोलकाता-७०००८९.



## ६ स्थानों के 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञों' को संमिश्र प्रतिसाद

कहीं पर जोरदार, तो कहीं पर मध्यम व सामान्य वर्षा

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ समिति के तत्वावधान में राज्य के ६ स्थानों पर दि. २७ जून से ३ जुलाई २०१६ के दौरान आयोजित 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। सम्भाजीनगर(औरंगाबाद), परली-वैजनाथ, माजलगांव इन तीन स्थानों पर बड़े पैमाने पर तो हदगाव, किल्लेधारु एवम् उदगीर इन तीन स्थानों पर मध्यम स्वरूप में ये यज्ञ हुए। इनका परिणाम संमिश्र रूप में दिखाई दिया। सम्भाजीनगर में यज्ञ के अंतिम दिन लगातार दो दिनों तक जोरदार वर्षा हुई। माजलगाव में यज्ञ के दौरान पाँच दिनों तक बड़े पैमाने पर घमासान बादल बरसे। हदगांव में लगभग चार-पाँच दिनों तक बारीश होती रही। परली-वैजनाथ में विशेष बारीश नहीं हुई, किंतु प्रतिदिन सायंकाल आकाश में बादलों की भीड़ बढ़ती दिखाई दी और पूर्णाहुति के दो दिन बाद वर्षा हुई। किल्लेधारु में भी दो दिन वर्षा हुई। उदगीर में पूर्णाहुति के बाद दूसरे दिन काफी वर्षा हुई। कुल मिलाकर ये ६ महायज्ञ संतोषजनक सिद्ध हुए।

महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा ने इन महायज्ञों के लिए वृष्टिविशेषज्ञ सर्वश्री आचार्य डॉ. कमलनारायणजी आर्य, पं. नंदकुमारजी आर्य(रायपुर-छत्तीसगढ़), डॉ. प्रद्युम्नकुमार शास्त्री(राँची-झारखंड), पं. शिवकुमार शास्त्री(नागपुर), पं. राजवीरजी शास्त्री(सोलापुर), पं. सोममुनिजी(बार्शी) आदियों को विद्वान पुरोहित के रूप में आमंत्रित किया था। प्रतिदिन प्रातः एवं दोपहर उपरोक्त स्थानों पर यज्ञों के माध्यम से भक्तिमय वातावरण बन चुका था। गाँव तथा नगर के यज्ञ एवं पर्यावरण प्रेमी श्रद्धालु लोग इन यज्ञों में सम्मिलित होते रहे। नागरिकों ने इन यज्ञों की पूर्णता के लिए तन-मन-धन से सहयोग देकर परोपकार कार्य में अपना हाथ बंटाय़ा।

### सम्भाजीनगर में अन्तिम दिन वर्षा

मराठवाडा की राजधानी सम्भाजीनगर (औरंगाबाद) में पर्यावरण एवं वृष्टिविशेषज्ञ आचार्य डॉ. कमलनारायणजी आर्य प्रमुख ब्रह्मत्व में तथा पं. शिवकुमार शास्त्री सान्निध्य में 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ' विशेष सफल रहा। सप्ताहभर के इस महायज्ञ में लगभग



१५०० यजमानों ने बदल-बदलकर सश्रद्ध आहुतियां प्रदान की। इस यज्ञ में सभामंत्री माधवराव देशपांडे, पू.पुरणदास महाराज, पू.परमिन्दरदासजी, श्यामलहरि गिरि, वि.हि.प.के मंत्री विनायकराव देशपांडे, प्रांताध्यक्ष संजय बारगजे, कन्हैयालाल सिद्ध, उत्तमराव मनसुटे, सांसद चंद्रकांतजी खैरे, डॉ.श्री आनंद व सौ.सुनयना मलिक, आदि सम्मिलित हुए। कैलाशनगर स्थित पू.महंत ज्वालादास महाराज के उदासी अखाड़ा मठ में आयोजित इस यज्ञ के पूर्णाहुति के अवसर पर तेज वर्षा हुई। चहुं ओर जोरदार पानी बरसने से इस यज्ञ की सफलता की चर्चा सर्वत्र सुनने मिली।

प्रान्तीय पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ के संयोजक श्री दयारामजी बसैये बन्धु, आर्यसमाज सम्भाजीनगर के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी दायमा, कोषाध्यक्ष एड.जोगेन्द्रसिंह चौहान, जगन्नाथ बसैये, नारायणसिंह होलिये आदियों ने इस महायज्ञ को पूर्णत्व प्रदान करने काफ़ी भूमिका निभाई। पूर्णाहुति के पश्चात् ऋषि भंडारे का भी आयोजन हुआ।

**परली में प्रतिदिन वर्षासदृश वातावरण**

प्रान्तीय सभा के सम्पर्क कार्यालय आर्य समाज परली के मैदान में आयोजित पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ के ब्रह्मापद को पं.श्री नंदकुमारजी आर्य ने सुशोभित किया, जिसमें

सर्वश्री पं.प्रशान्तकुमार शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, प्रा.अरुण चव्हाण, तानाजी शास्त्री आदियों सहयोगी पुरोहित की भूमिका निभाई। श्रद्धानन्द गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। इस वृष्टियज्ञ के आयोजन में सक्रिय आर्य कार्यकर्ता श्री जयकिशोरजी दोडिया की सहारणीय भूमिका रही। क्योंकि सभी को पानी मिले व प्राणिमात्र सुखी रहे, इस परोपकार की भावना को लेकर यज्ञ के आयोजन हेतु वे आगे आये और सभी प्रेरणा मिली। उनके अतिरिक्त श्री रंगनाथजी तिवार ने यज्ञीय व्यवस्थापन में सर्वाधिक समय दिया और पूरी तरह से समर्पित भाव के साथ कार्यतत्पर रहें।

इस महायज्ञ में यजमान के रूप में सर्वश्री जुगलकिशोर लोहिया, उग्रसेन राठौर, जयकिशोर दोडिया, हुलगुंडे गुरुजी, गोवर्धन चाटे, रमेश भंडारी, नंदकिशोर लोहिया, जगदीश मंत्री, सचिन तोतला, अनुप भंसाली, डॉ.मधुसूदन काले, सुनिल दुबे, गोपाल लाहोटी, बट्टीनारायण बाहेती, अमित राठौर, सत्यनारायण लोहिया, रंगनाथ तिवार, अशोक भाला, सिमेंट फॅक्ट्री के श्री अग्रवाल साहब, विजय लड्डा, डॉ.विश्वास भायेकर, महेश लाहोटी, लक्ष्मीनारायण मंत्री, विकासराव डुबे, बालाजी टाक, श्रीराम दोडिया, नेताजी



देशमुख, तोगाजी शास्त्री, केदार सारडा, दत्ताप्पा इटके, रविंद्र कावरे, प्राचार्य डॉ.आर.के.इप्पर, दयानंद भारती, जयपाल लाहोटी, सचिन सारडा, ओमप्रकाश भंडारी आदि सपत्नीक सम्मिलित हुए ।

यहाँ पर यज्ञारम्भ के तीन दिन बाद प्रतिदिन सायंकाल आकाश में बड़े पैमाने पर बादल छाये रहे, कुछ बूँदा-बांदी भी हुई। पूर्णाहुति के पश्चात् तीसरे दिन दोपहर व सायं काफी वर्षा हुई ।

### माजलगांव में पाच दिन काफी वर्षा

बीड जिले के माजलगांव शहर के जुना मोंढा विभाग में स्थित गणपति मन्दिर में 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ' बड़े उत्साह भरे वातावरण में सम्पन्न हुआ । रांची से पधारे यज्ञविशेषज्ञ डॉ.प्रद्युम्नकुमारजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ सम्पन्न हुआ । आर्ष कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा से आमन्त्रित ब्रह्मचारिणियों ने सस्वर वेदपाठ किया। इस यज्ञ में यजमान के रूप में सर्वश्री बळीराम सोळंके, यशवंत सोळंके, रामेश्वर टवानी, अमोल कोळपकर, गजानन रुद्रवार, विजय दुगड, अभय गोकड, गोविंद बजाज, जगदीश चांडक, अशोक कोळपकर, उदय कुलकर्णी, प्रभाकर बनसोडे आदि सपत्नीक सहभागी हुए । यहां का यज्ञ बहुतही सुपरिणामकारक

सिद्ध हुआ, क्योंकि यज्ञ के प्रथम दिन ही वर्षा का आगमन हुआ । छीच-छीच रुक-रुककर लगभग पांच दिनों तक वर्षा होती रही । यज्ञीय विधिविधान के सुखद लाभों को देखकर स्थानीय लोगों में यज्ञ के प्रति आस्था व श्रद्धा बढ़ती दिखाई दी । आर्यसमाज के प्रधान श्री अनन्तरावजी रुद्रवार के नेतृत्व में यज्ञ की सफलता के लिए आर्य कार्यकर्त्ता सर्वश्री प्रा.लक्ष्मीकान्तजी शास्त्री, पं.रवीन्द्र शास्त्री, पं.सुरेश नेळगे, सौ.मालिन रुद्रवार, डॉ.आनंदगावकर, परमेश्वर निगुत आदियों ने प्रयास किये ।

### हदगांव में रोज लगातार वर्षा

आर्य समाज हदगांव में आयोजित पर्जन्यवृष्टि यज्ञ के आरम्भ से ही सर्वत्र सर्वदूर बारीश होती रही। आचार्य पं.राजवीरजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यहां पर प्रतिदिन प्रातः ९ से ११ और दोपहर ४ से ६ बजे के बीच यज्ञ चलता रहा । इन सात दिनों में लगभग १६ यजमानों ने आहुतियां प्रदान की । यज्ञ में बाबुजी श्री तोष्णीवालजी के साथ ही आर्यसमाज के पदाधिकारी गण नियमित आते रहे । यज्ञ के पश्चात् श्री शास्त्रीजी के विभिन्न विषयों पर मौलिक प्रवचन भी होते रहे। साथ ही



पं.सोगाजी घुन्नर ने भजन प्रस्तुत किए।

यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन लगभग डेढ़ सौ श्रद्धालु यज्ञप्रेमियों की उपस्थिति रही। यज्ञ की सफलता के लिए इस आर्य समाज के प्रधान श्री शेषराव शिंदे, मन्त्री श्री प्रभाकरराव देशमुख, उपप्रधान वाय.के.कदम, श्रीमती कमलबाई झंवर, अविनाश देशमुख, निर्मलाबाई शिंदे, आर्यमुनिजी, पं.सोगाजी घुन्नर आदियों ने काफी प्रयास किये।

### धारुर में दोन दिन वर्षागमन

आर्यसमाज, किल्लेधारुर की ओर से प्रतिदिन प्रातः ७ से ८.३० बजे के बीच पर्जन्यवृष्टि यज्ञ चलता रहा। घुमक्कड वानप्रस्थी पं.सोममुनिजी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुए इस यज्ञ में लगभग २० यजमान सम्मिलित हुए। यज्ञ दौरान ८ जून तथा २ जुलाई को बढ़िया वर्षा हुई। बीच-बीच में मेघों के आगमन से बारिश होने की सम्भावना बढ़ती रही। इस यज्ञ में यजमान के रूप में सर्वश्री डॉ.मुंडे साहब, प्रधान प्रमोदकुमार तिवारी, मन्त्री एड.प्रमोद मिश्रा, कोषाध्यक्ष कमलाकर इन्दुरकर, बाबासाहब थोरात गुरुजी, प्रवीण जवकर, अमोल दुबे, दयानंद इन्दुरकर, श्रीमती रमादेवी तिवारी आदियों ने सम्मिलित होकर श्रद्धा के साथ आहुतियाँ प्रदान की।

### उदगीर में पूर्णाहुति के दूसरे दिन वर्षा

आर्यसमाज उदगीर में दि.१ से ३ जुलाई के दौरान त्रीदिवसीय पर्जन्यवृष्टि यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के ब्रह्मापद को पं.धर्ममुनिजी वानप्रस्थी एवं पं.माणिकराव टोम्पे को सम्भाला! वेदपाठ पं.माधव मैलारे, प्रमोद शास्त्री, प्रकाशवीर आर्य, डॉ.नरेन्द्र शिन्दे आदियों ने किया। प्रातः एवं दोपहर सम्पन्न हुए इन यज्ञों में यजमान के रूप में सर्वश्री डॉ.नरेन्द्रजी शास्त्री (शिन्दे), सुबोध अम्बेसंगे, किट्टेकर, कन्धारे, सुनील हंगरगे, चन्द्रगुप्त आर्य, पं.प्रतापसिंह चौहान, गंगाधर फड आदि सपत्नीक सम्मिलित हुए। यज्ञ के दौरान आकाश में बादल दृष्टिगोचर हुए। यज्ञ की समाप्ति के दूसरे दिन घमासान वर्षा हुई और चहुं ओर पानी ही पानी हुआ।

पूर्णाहुति के दिन कर्नाटक गोसंरक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री पं.शर्माजी ने उपस्थितों को सम्बोधित किया। यज्ञ की सफलता के लिए श्री अजितकुमारजी सरसम्बे सहित आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने काफी प्रयत्न किये तथा अन्य यज्ञप्रेमियों ने आर्थिक सहयोग दिया।

जिन-जिन दानी महानुभावों ने आर्थिक सहयोग देकर इन महायज्ञों को सफल किया उन सभी दानदाताओं के कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद व आभार!

\*\*\*





### माता लक्ष्मीबाई तासके का देहावसान

विदर्भ की प्रसिद्ध समाजसेवी आर्य कार्यकर्त्री एवं वैदिक सिद्धान्तों का बड़ी निष्ठा के साथ पालन करनेवाली माता श्रीमती लक्ष्मीबाई कान्हूजी तासके (आर्या) का शनिवार दि. २ जुलाई २०१६ को वृद्धावस्था के कारण दुःखद निधन हुआ। वे ८० वर्ष की थी।

बनाने हेतु आपने दो माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की तथा वैदिक शिक्षाप्रसार हेतु नागपुर के समीपस्थ कान्हा आर्ष गुरुकुल खुलवाने हेतु अपने पुत्रों को सत्प्रेरित किया। अपने आदर्श जीवन द्वारा उन्होंने समाज में आर्य नारी होने का गौरव प्राप्त किया और अपने 'लक्ष्मी' इस नाम को भी सार्थक किया।

माताजी आपने पश्चात्

पांच सुयोग्य सुपुत्र सर्वश्री चन्द्रभानु (अध्यापक), गोविन्दराव (आर.टी.ओ. अधिकारी), शुचित्रत (प्रधानाध्यापक), नामदेव (अध्यापक), उत्तमराव (अध्यापक) तथा दो पुत्रियाँ सौ. शकुबाई काशीनाथ पेंढे व सौ. रुक्माबाई यादवराव जामकर,



पुत्रवधुएं तथा पौत्र-नप्त्रादि से भरा विशाल परिवार छोड़कर संसार से विदा हुई। विशुद्ध धार्मिक व आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत माता लक्ष्मीबाई का समग्र जीवन परोपकार, शिक्षा प्रसार व सामाजिक कार्यों में लगा रहा। अपने कट्टर वैदिक धर्मी व देशभक्त पतिदेव स्व. कान्हूजी के राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यों में आपने सहधर्मचारिणी के रूप में बड़ा साथ दिया। उनके साथ रहते हुए सत्याग्रह में भी उन्होंने सोत्साह भाग लिया। अपने पुत्रों व कन्याओं को वैदिक संस्कारों की शिक्षा दी। गांव के बच्चे-बच्चियों को सुशिक्षित

माताजी के पार्थिव शरीर पर उनके ग्राम पलसी ता. उमरखेड जि. यवतमाल में पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। कान्हा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य श्री धर्मवीरजी व उनके शिष्य ब्रह्मचारियों ने यह संस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर

परिसर की आर्य जनता भारी संख्या में उपस्थित रही। दिवंगत आत्मा को प्रान्तीय सभा की भावपूर्ण श्रद्धांजली!

#### श्रावणी वेदप्रचार २०१६

महाराष्ट्र में इस वर्ष अकाल पडने के कारण प्रान्तीय सभाद्वारा इस वर्ष का श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव साधारण रूप में मनाया जा रहा है। सम्भवतः इसी प्रान्त के विद्वानों को सभांतर्गत सभी आर्यसमाजों के श्रावणी कार्यक्रम हेतु भेजा जाएगा। कुछ ही दिनों में विस्तृत श्रावणी परिपत्रक सभी को भेजे जाएंगे।

-सभा मंत्री



## आर्यसमाज लातूर का वार्षिकोत्सव सोत्साह

लातूर की प्रसिद्ध आर्यसमाज, गांधी चौक ८१ वां वार्षिक महोत्सव दि. २५ से २७ मार्च २०१६ के दौरान सोत्साह मनाया गया। तीनों दिन प्रातर्वेला में विशेष बृहद्यज्ञ, धार्मिक व आध्यात्मिक विषयों भजन, प्रवचन तथा रात्रि में ८ से १० बजे तक राष्ट्रीय सामाजिक तथा समसायिक विषयों पर भजन एवं व्याख्यान होते रहे। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उत्तराखंड) से आमन्त्रित वैदिक विद्वान् डॉ. दीनदयालजी वेदालंकार के मौलिक विचारों को सुनकर श्रोतागण काफी प्रभावित हुए। उन्होंने वैदिक मन्त्रों पर आधारित विचारों द्वारा परिवार समाज व राष्ट्र में उत्पन्न समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि, वेदज्ञान ही समस्त मानव व प्राणिसमूह के शाश्वत सुख, शान्ति व आनन्द का मूलभूत केन्द्र है। इसी ज्ञानभण्डार का आश्रय पाकर हम अपना भौतिक, आत्मिक

उन्नयन कर सकते हैं। ऋषिउद्यान अजमेर(राज.) से पधारे भजनोपदेशक श्री पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य ने अपने उंचे स्वर में भजनों की प्रस्तुति की। श्री लेखरामजी आर्य ने उन्हें ढोलक पर साथ दिया। पं. भूपेन्द्रसिंहजी ने अपने भजनोपदेश में कहा कि- 'समाज में फैलते जा रही अविद्या पाखण्ड की आंधी व पाश्चात्य कुविचारों के तूफान से वैदिक संस्कृति की नैया डांवाडोल हो रही है। ऐसे में आर्यसमाज की जिम्मेदारियां बढ़ जाती है, तब आर्यों को अपने प्रबल पुरुषार्थ से वेदधर्म के प्रचार व प्रसर के लिए आगे आना चाहिए।

उत्सव पर लातूर नगर सहित परिसर के देहाती आर्यजन काफी संख्या में पधारे थे। पदाधिकारियों ने तीन दिन तक उपस्थितों के भोजन व निवास की व्यवस्था उत्तम प्रकार से की थी।

## रोजड में आर्ष कन्या गुरुकुल का उद्घाटन

तपोनिष्ठ योगी पूज्य स्वामी सत्यपतिजी महाराज के सुसान्निध्य में चल रहे आर्य वन रोजड परिसर में हाल ही में नया 'आर्ष कन्या गुरुकुल' स्थापित हो चुका है। दर्शन योग महाविद्यालय के ३० वे वार्षिकोत्सव अवसर पर दि. ८ व ९ अप्रैल

को विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ था। इसमें आर्ष कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ भी एक विशेष समारोह था। आर्यजगत् के विद्वान, नेता, गुजरात राज्य के विभिन्न मन्त्रीगण तथा अधिकारियों की उपस्थिति में इस नये कन्या गुरुकुल का उद्घाटन हुआ।



अलियाबाद (तेलंगणा) के आर्ष शोध संस्थान द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरुकुल की यशस्वी स्नातिका रही आचार्या डॉ.शीतलजी इस नये कन्या गुरुकुल की प्रधानाचार्य बन गयी हैं। इन्होंने आचार्य आनन्द प्रकाशजी एवं आचार्या नीरजाजी के सान्निध्य में रहकर वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया है। ऐसी सुयोग्य विदुषी के नेतृत्व में आर्यजगत् का यह नया 'आर्ष कन्या गुरुकुल' विदुषी कन्याओं के निर्माण

में एक क्रान्तिकारी संस्थान के रूप में कार्य करता रहेगा।

इस कन्या गुरुकुल में प्रविष्ट कन्याओं को मुख्यरूप से पाणिनीय अष्टाध्यायी के क्रम से महाभाष्य पर्यंत सम्पूर्ण व्याकरण, निरुक्त, छंदःशास्त्र तथा वैदिक साहित्य का अध्यापन कराया जाएगा और साथ ही दर्शन में वर्णित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी सिखाया जायेगा।

## कर्नाटक सभा का 'पुरोहित प्रशिक्षण शिविर' सम्पन्न

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दि.२० से २९ मई २०१६ के दौरान प्रान्तीय 'पुरोहित प्रशिक्षण शिविर' सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस शिविर में कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगणा इन प्रान्तों के लगभग ३५ प्रशिक्षकों ने सहभाग लिया। हैदराबाद के निकटस्थ वेदगुरुकुलम् खानपुर में आयोजित इस शिविर में आचार्य पं.नरेन्द्रजी शमसत्री ने प्रशिक्षणार्थियों को पंचमहायज्ञ, वैदिक १६ संस्कार, नैमित्तिक कर्म आदियों का उत्तमरूपेण प्रशिक्षण दिया। महाराष्ट्र से पधारे डॉ.नयनकुमार आचार्य ने भी कुछ संस्कार सिखाये। शिविर के दौरान भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान ने मधुर भजन गाकर प्रशिक्षणार्थियों का उत्साह बढ़ाया। शिविर का समापन प्रसिद्ध योगधर्मी तथा तेलुगू भाषा के उच्चकोटी के

वैदिक विद्वान् आचार्य पं.रघुमन्नाजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कर्नाटक सभा के प्रधान श्री सुभाषजी आष्टीकर, कोषाध्यक्ष श्री मारुतीरावजी, बसवकल्याण आर्यसमाज के प्रधान श्री नारायणरावजी बुन्ना, पं.माणिकरावजी लाड आदि उपस्थित थे। प्रमुख मार्गदर्शक आचार्य श्री नरेन्द्रजीने कहा- समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण में आर्यपुरोहितों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। अतः आर्य पुरोहित सदैव जागरूक रहकर अपनी जिम्मेदारियों को सम्भालें। श्री आष्टीकरजी ने कर्नाटक सभा की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। पं.रघुमन्नाजीने वेदज्ञान का अनुसरण करने का आवाहन किया। संचालन श्री सुरेन्द्रगीर गोस्वामीने किया। प्रशिक्षणार्थियों ने अपने शिविरकालीन अनुभव कथन किये।



## तीन वर्ष का बालक करता है यज्ञ !

बच्चे मन के सच्चे होते हैं । प्रातःकालीन यज्ञ में सम्मिलित होकर बाल्यावस्था में उनके कोमल मन पर अंकित आहुतियां प्रदान करता है । इस बालक को शुभसंस्कार निश्चित ही भविष्य की उज्ज्वल निशानी बन जाती है। बसवकल्याण (कर्नाटक) के गोस्वामी आर्य परिवार में पलनेवाला 'ऋग्वेद' नामक तीन वर्षीय बालक इसी का एक आदर्श उदाहरण है । यह नन्हा-मुन्ना बालक अपने दादा श्री सुरेन्द्रगीर गोस्वामी के साथ प्रतिदिन सबेरे आर्यसमाज में जाता है । वहां पर बधाई व शुभाशीष।

## वानप्रस्थाश्रम रोजड में रोजाना १२ घण्टे यज्ञ

आर्य जगत् को सुविदित कराते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य वानप्रस्थाश्रम रोजड (गुजरात) में गत २० मार्च २०१६ से प्रतिदिन १२ घण्टों तक चलनेवाले यज्ञ का शुभारम्भ हो चुका है । धार्मिक व आध्यात्मिक वातावरण निर्माण के साथ

ही पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से यह अग्निहोत्र प्रक्रिया शुरू हुई है । इस यज्ञ में देशभर से पधारे आश्रम के हितैषी, सहयोगी, शुभचिंतक, श्रद्धालु आर्यजन अपनी आहुतियां प्रदान करते हैं । इस यज्ञाग्नि से परिसर शुद्ध होकर वातावरण भक्तिमय बनता है ।

## उदयपुर में होगा 'आर्य सम्पादक सम्मेलन'

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से आगामी २३ व २४ जुलाई २०१६ को नवलखा महल, उदयपुर में आर्य पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों के सम्मेलन का आयोजन हो रहा है । आर्य समाज की दशा सुधारने व उसके साथ ही समाज को नई दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से आर्यपत्रिकाओं को सम्पादकों की क्या भूमिका हो ? समग्र विश्व में फैले अविचारों

को दूर कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार लेखनी के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से कैसे हो ? आदि विषयों पर इस सम्मेलन में विचारमंथन होगा ।

अतः देश की आर्य पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक बन्धुओं को इस सम्मेलन में पधारने का आवाहन न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोकजी आर्य (१३१४२३५१०१) ने किया है ।



माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।  
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

## मराठी विभाग

### उपनिषद संदेश

#### मुक्ती कोणास म्हणतात ?

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् ।  
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥

(तैत्तेरीय उप.१/१)

जो जीवात्मा आपली बुद्धी व आत्मा यांमध्ये असणाऱ्या सत्य, ज्ञान व अनंत आनंदस्वरूप परमेश्वराला जाणतो, तो त्या सर्वव्यापक ब्रह्म्यामध्ये स्थित होऊन त्या विपश्चित म्हणजे अनंत विद्यायुक्त ब्रह्म्यासह सर्व सदिच्छांची प्राप्ती करून घेतो. अर्थात् ज्या-ज्या आनंदाची अभिलाषा तो बाळगतो, तो तो आनंद त्याला प्राप्त होतो. यालाच 'मुक्ती' असे म्हणतात.

### दयानंद वाणी

#### आपसात फुट नको... !

पाच हजार वर्षांपूर्वी घडलेल्या महाभारतातल्या गोष्टी तुम्ही विसरलात काय ? महाभारतीय युद्धात लढणारे सारे वीर आपापल्या वाहनांवर बसूनच खाणेपिणे करीत असत. आपसातील यादवीमुळेच कौरव, पांडव व यादव यांचा सत्यानाश झाला. तोच यादवीचा रोग अजूनपर्यंत भारतीयांचा मागे लागला आहे. भयंकर राक्षस आमची मानगूट कधी सोडेल की नाही कोण जाणे ? की आर्यांना साऱ्या सुखांपासून वंचित करून तो त्यांना दुःख सागरात बुडवून टाकील ? आपल्या गोत्राची हत्या करणाऱ्या स्वदेशाचा विनाश करणाऱ्या, नीच व दुष्ट दुर्योधनाच्या दुष्ट मार्गाने आर्य लोक आजही चालले आहेत व आपल्या दुःखात भर घालीत आहेत. परमेश्वराने आम्हां आर्यांवर कृपा करावी आणि हा राजरोग नष्ट करावा.

(सत्यार्थप्रकाश-१० वा समुल्लास)



# पर्यावरण जपण्यासाठी- 'यज्ञ'

- पं.रमेश ठाकूर

पर्यावरणाच्या रक्षणाचा संकल्प करण्यासाठी पर्यावरण म्हणजे काय ? हे जाणून घेणे आवश्यक आहे. आपल्या भोवतालची एकूण परिस्थिती, सभोवतालची जमीन, हवा, पाणी, प्रकाश, ध्वनी, सारे जीवमात्र व वनसृष्टी हे सगळेच पर्यावरणाचे घटक आहेत. हे सर्व घटक आपले जीवन सुखकर करण्याचे घटक आहेत, पण हे सर्वच घटक परस्परांशी निगडित व परस्परावलंबी असतात. या घटकांचे संतुलन असले तरच सर्व जीव गुण्यागोविंदाने राहू शकतात. ते बिघडले तर जीवास ते घातक ठरते. यासच पर्यावरणाचे प्रदूषण म्हणतात.

पर्यावरणातील जे घटक पर्यावरणाचे संतुलन बिघडवतात, त्यांना प्रदूषक म्हणतात. पर्यावरणात झालेले हे बदलच आज साऱ्या जगाची झोप उडवून देण्यास कारणीभूत ठरले आहेत आणि याचसाठी जागतिक पर्यावरण दिन ५ जूनला साजरा केला जातो. पर्यावरणाच्या रक्षणासाठी पर्यावरणातील घटकांचे संतुलन या मानवानेच बिघडवले आहे. म्हणून पुनश्च हे संतुलन मूळ स्थितीस आणण्यासाठी मानवालाच म्हणजे आपणासच प्रयत्न करावे लागणार आहेत.

केला असेल तर तो आपल्या वेदकालीन पूर्वजांनी! आणि म्हणूनच यावर उपायही आपल्या पूर्वजांनी सांगितले व ते कृतीतही आणले होते. तो उपाय आहे- 'यज्ञ' अर्थात् अग्निहोत्र ! महर्षी स्वामी दयानंदांनी अगदी अलीकडच्या काळात पर्यावरण रक्षणासाठी अग्निहोत्र हा उपाय सुचविला.

अग्निहोत्र करतांना त्यात अर्पिले जाणारे पदार्थ नष्ट होत नाहीत व नव्याने कांही निर्माणही होत नाहीत. त्यासाठी लागणारी सामग्री अनेक वनस्पतींचे खोड, पाने, मूळ, फूल, फळे इत्यादींच्या चूर्णापासून बनविली जाते. ज्वलनात निर्माण होणाऱ्या कार्बन मोनॉक्साईडसारख्या विषारी द्रव्यांची निर्मिती रोखण्यासाठी अग्निहोत्राचा विधी आहे. त्यामुळे वातावरणातील डास व त्यासारखे अन्य उपद्रवी जीव दूर जातात. अग्निहोत्रामुळे हवेचे शुद्धीकरण होण्यास मदत मिळते. अग्निहोत्राचा चिकित्सक अभ्यास पंजाब विद्यापीठाच्या रसायनशास्त्र विभागाचे प्रमुख डॉ. सत्यप्रकाश यांनी त्यांच्या पुस्तकात केला आहे. डॉ. कुंदनलाल (एम.डी.) यांनीही 'यज्ञ चिकित्सा' या पुस्तकात वैद्यकीय चिकित्सापद्धतीत यज्ञ कसे उपयुक्त ठरतात? याचे विवरण दिले आहे. Matter neither creates nor it be destroyed हे विज्ञानाचे तत्त्व आहे.

पर्यावरणाचा खरा विचार जर कुणी

वैदिक गर्जना \*\*\*

२८

\*\*\* जून-जुलाई-२०१६



यज्ञासाठी हे तत्त्व अंमलात आणले आहे.

१) यज्ञ- एक वैज्ञानिक प्रक्रिया

❖ अग्निहोत्रासाठी वापरले जाणारे मुख्य साधन, ज्याला 'यज्ञकुण्ड' म्हणतात, त्याचा आकार वैज्ञानिकच आहे.

❖ यज्ञासाठी विशिष्ट वनस्पतींचीच लाकडे (समिधा) वापरावी लागतात. आंबा, वड, पिंपळ, चंदन, पळस इत्यादी वापरतात.

❖ सामग्रीत कस्तुरी, केसर, अगर, तगर, चंदन, विलायची, जायफळ, जावित्री, तुळस, कापूर, बालछड, गुग्गळ, कश्मिरी धूप, लवंग, नागरमोथा, गुलाब पुष्प इत्यादी.

❖ अग्निहोत्रासाठी शुद्ध तूप विशेष करून गायीचे तूप वापरण्याचा आग्रह आहे.

❖ यज्ञात लाकडे पेटवून एकदाच सामग्री व तूप ओतण्यास सक्त मनाई आहे.

❖ यज्ञात द्यावयाची आहुती ठराविक ओळींच्या मंत्रोच्चारणानंतर देण्यात यावी. मंत्रोच्चारण विशिष्ट लयबद्ध चालीत करावयाचे आहे. यासाठी कांही ठराविक काळ लागतो. त्या कालावधीत अगोदर अर्पण केलेल्या आहुतीच्या ज्वलनास आवश्यक असतो.

❖ यामुळे अर्धवट ज्वलनात निर्माण होणाऱ्या कार्बन मोनाक्साईडसारख्या विषारी द्रव्यांची निर्मिती थांबवली जाते.

❖ प्रत्येक मंत्र विशिष्ट अर्थाचा असून त्यातून मूल्यशिक्षणही होते.

❖ यज्ञात वापरलेल्या द्रव्यात रासायनिक क्रिया होते व नवीन उत्पादिते तयार होतात.

❖ यज्ञातील अधिकांश (५० टक्के पेक्षा जास्त) उत्पादिते पर्यावरणातील दूषिततेचे प्रमाण कमी करण्याचे काम करतात.

❖ वातावरणातील डास व त्यासारखे अन्य उपद्रवी जीवांना नष्ट करण्याचे कार्यही यज्ञामुळे होते.

❖ वातावरण सुगंधी व प्रसन्न बनविण्याचे काम सुलभतेने होते.

❖ यज्ञकुंडाच्या विशिष्ट आकारामुळे तळाकडून पृष्ठभागाकडे तापमान वाढविण्याची क्रिया होत असल्यामुळे द्रव्याचे पूर्ण ज्वलन होण्यास मदत होते.

❖ यज्ञात अर्पण केलेल्या स्थूल पदार्थाचे सूक्ष्म रूपात रूपांतरण होण्याचे कार्य घडते. यामुळे परिणामाच्या क्षेत्रात वाद होते व त्याच्या क्रियाशीलतेतही वृद्धी होते.

२) अग्नीमुळे द्रव्यगुणधर्मात वृद्धी-

उदाहरणच घ्यावयाचे झाले तर मिरचीचे ! एक मिरची एखाद्याने खाल्ली तर ती खाणाऱ्यासच तिखटाचा अनुभव येतो. पण तीच मिरची अग्नीस अर्पण केली तर तिच्या तिखटपणाचा अनुभव त्या घरातीलच नव्हे, तर सर्व गल्लीतील प्रत्येकांना तिखटपणा व खाट(ठसका) यांचा तीव्र अनुभव येतो. हे त्या तिखटपणाच्या गुणधर्मातील वृद्धीमुळे होते.



### ३) पदार्थ सूक्ष्म व स्वास्थ्यलाभ-

स्थूल पदार्थ जेव्हा अग्नीस अर्पण केले जातात. तेव्हा त्यांचे सूक्ष्मात रूपांतर होते, त्याचा प्रभाव वाढतो व परिणामाचे क्षेत्रही वाढते. उदारणार्थ गुग्गळ किंवा उद घरी डबीत ठेवतो. ते कोणलाही माहित होत नाही. फक्त ठेवणारा व ठेवलेले पाहणारा तेवढ्यांनाच ते माहित होते. पण गुणधर्म कळू शकत नाहीत. त्याच गुग्गळाचा धुपारतीत ठेवलेल्या लालभडक विस्तवावर अगदी लहानसा तुकडा टाकला तरी त्याचा सुगंध सान्या गल्लीतील लोकांना कळतो. ही किमयाही त्या अग्नीचीच!

### ४) अग्नी पदार्थास अधिक शुद्ध बनविते

सोनारास दिलेली सोन्याची वस्तू तो अग्नीत घालून रसरशीत लाल होईपर्यंत तापवितो. यामुळे त्यातील हिणकस भाग जळून जातो व असली सोने शिल्लक राहते. अग्नीस अर्पित पदार्थाचे सूक्ष्मात रूपांतर होते व त्याच्या गुणांचा प्रभाव वाढतो. विस्तारितही होतो. यामुळे त्या पदार्थाच्या औषधीगुणातही वाढ होते. आयुर्वेद, होमिओपॅथी, ऍलोपॅथी या तिन्ही चिकित्सा पद्धतीत याच तत्वाचा वापर होतो. म्हणूनच भस्म, चूर्ण व रासायनिक गोळ्यांची निर्मिती याच कारणामुळे केली जाते. ती औषधी आपल्या पोटात जाते.

### ५) वातावरणाचे शुद्धीकरण -

अग्निहोत्राने म्हणजेच यज्ञाने हवेचे

शुद्धीकरण होण्यास मदत होते. या प्रसंगी असा प्रश्न विचारला जाऊ शकतो की, अग्निहोत्रात ज्वलनासाठी लाकडांचा वापर होतो. त्यातून कार्बनडाय ऑक्साईड वायू तयार होईल आणि मग हवा शुद्ध होते हे कसे म्हणाल ? बरोबर आहे! कार्बन डायऑक्साईड हा हवेचा घटक आहे.

०.०३% इतका कार्बनडाय ऑक्साईड वायू हवेत असतो. हे प्रमाण कायम राहणे ही गरजेचेच असते. कारण हा वायू वनस्पतींना अन्न तयार करण्यासाठी गरजेचा असतो. दुसरे असे की, आज सर्व शहरातून सक्तीने रॉकेलच्या धुसची धुसळणी केली जाते आहे. डासांच्या निर्मूलनासाठी यात कार्बनडाय ऑक्साईड बरोबर कार्बन मोनाक्साईडही असते. त्याचे प्रमाण विचारात घेता यज्ञातून तयार होणाऱ्या कार्बनडाय ऑक्साईडचे प्रमाण नगण्यच समजावयास हवे. शिवाय यज्ञातून बाहेर पडणारा वायू डास निर्मूलनास मदतच करेल. घरोघरी यज्ञ झाल्यास रॉकेलचा धूर धुराळण्याची गरज भासणार नाही.

दुसरे असे की, यज्ञासाठी ठराविक वनस्पतींचीच लाकडे (चंदन, वड, पिंपळ, करवंद, आंबा) असतात. याशिवाय विशिष्ट सामग्री वापरावयाची असते. त्यात गुलाब, कस्तुरी, अगर, तगर, चंदन, विलायची, जायफळ, जावित्री, तुळस, कापूर, गुग्गळ, उद, काश्मिरी धूप, लवंग, नागरमोथा इत्यादींचे चूर्ण रुप मिश्रित केलेले असते.



या सर्वांच्या ज्वलनाने सुगंधीत द्रव्यांची निर्मिती होते. याच्यामुळे रोगोत्पादक व अन्य घातक जीवाणू तसेच विषारी द्रव्यांना घरात येण्यास प्रतिबंध होतो. खरे तर हा घरातील वायूंच्या शुद्धीकरणाचाच भाग आहे.

यज्ञात वापरली जाणारी समिधा(लाकडे) व सामग्री यांचे रासायनिक विश्लेषण तथा ज्वलनानंतरची उत्पादिते यांचे चिकित्सक विवरण पंजाब विद्यापीठाचे रसायनशास्त्र विभागाचे प्रमुख डॉ.सत्यप्रकाश यांनी आपल्या 'अग्निहोत्र' या पुस्तकात केले आहे. प्रत्येकाच्या रासायनिक प्रक्रिया रासायनिक समीकरणांनीही स्पष्ट केल्या आहेत. मूळ पुस्तक इंग्रजीत आहे. सर्व उत्पादिते वातावरणाच्या शुद्धीकरणात कशी सहाय्यभूत आहेत? याचे वर्णन केलेले आहे.

यज्ञाबाबतचा आरोग्यशास्त्राच्या दृष्टीने चिकित्सक अभ्यास करणारे आणखी एक संशोधन लक्षात घेण्यासारखे आहेत, ते आहेत डॉ.कुंदनलाल (एम.डी.)! त्यांनी 'यज्ञ चिकित्सा' या पुस्तकात आपल्या वैद्यकीय चिकित्सा पद्धतीत यज्ञ कसे उपयुक्त ठरले? याचे विवरण दिले आहे. डॉ.कुंदनलाल ऍलोपेथिक डॉक्टर होते. त्यांनी यज्ञाचा क्षयरोग निर्मूलनासाठी कसा उपयोग होतो? याची चिकित्सा व प्रात्यक्षिके सादर केली आहेत. त्यांनी सदर पुस्तकात पृष्ठ १९३ वर केलेल्या वैज्ञानिक प्रयोगाचा

तपशील दिला आहे, तो त्यांच्याच शब्दात पहा -

“कांच की १२ शीशियां ली गई और वैज्ञानिक रीति से उन्हें नितान्त शुद्ध कर लिया गया तथा उनसे कृमि इत्यादि सब निकाल दिये गये। उसके पश्चात् दो-दो शीशियों में दूध, मांस इत्यादी ६ वस्तुएँ भरी गई। ६ शीशियों को एक ओर, और ६ शीशियों को दूसरी ओर रख दिया गया। उनमें से एक ओर वाली शीशियों में हवन-गॅस पहुँचाई गई और दूसरी ओर की शीशियों में उद्यान की शुद्ध वायु भर दी गई। शीशियां बन्द करके रखी दी गई और नित्यप्रति उनका निरीक्षण करते रहें। परिणाम यह निकला कि जिन शीशियों में उद्यान की वायु थी, उनमें सडाँद शीघ्र प्रारंभ हुआ और शीघ्रतापूर्वक बढ़ रहा था। इसके विपरीत जिन शीशियों में हवन-गॅस पहुँचायी गई थी उनमें सडाँद देर-से प्रारंभ हुआ और शनैः-शनैः बढ़ता रहा, जिसका मतलब साफ है कि हवन-गॅस ओषधजन-युक्त उद्यान की शुद्ध वायु से भी सडाँद को अधिक रोकती है। यह परीक्षण हवन की साधारण सामग्री से किया गया था। जब क्षय-नाशक विशेष सामग्री बनाई जाय, तो उसका प्रभाव उन सडे हुए फेफड़ों पर और अच्छा होगा, जो क्षय-रोग के कीटाणुओं के कारण सड़ने लगते हैं। साथ ही यह परीक्षण यह भी सिद्ध करता है कि जो लोग नित्यप्रति हवन करते हैं, उनके शरीर में इस प्रकार के रोग उत्पन्न ही नहीं हो सकते।



जिनमें किसी भीतर स्थान में प्रोप उत्पन्न हो, और यदि कहीं उत्पन्न हो, तो नित्यप्रति हवन-गैस पहुँचाने से मवाद तुरंत सूख जायगा और क्षत अच्छा हो जायगा।”

तात्पर्य हाच की यज्ञ ही एक वैज्ञानिक प्रक्रिया आहे. हवेच्या शुद्धीकरणासाठीचा एक उपयुक्त मार्ग! म्हणूनच प्राचीन काळी घरोघरी यज्ञानेच दिवसाची सुरुवात व्हायची. आज पुन्हा

याची गरज भासत आहे. यज्ञ कोणत्या एका धर्म, पंथ, जातीचा भाग नाही. हा खरा वैज्ञानिक व मानवहिताचा भाग आहे. पर्यावरण दिनाच्या निमित्त ‘यज्ञ’ करण्याचा संकल्प करू या...!

— गजानन महाराज मंदिर परिसर,  
गारखेडा, सम्भाजीनगर(औरंगाबाद)

मो.९४२३१७८८०३

## संदेश गुरुजींचा

### ईश्वरीय शक्ती विषयी कृतज्ञता !

या संपूर्ण जगातील कणा-कणांमध्ये परमेश्वराची दिव्य शक्ती ओतप्रोत आहे. जळी-स्थळी-काष्टी, पाषाणी-सर्वत्र त्याचीच सत्ता आहे. त्या ईश्वराच्या आधीन हे सारे जग व सारी व्यवस्था एका विशिष्ट गतिक्रमाने कार्यरत आहे. विश्वाचे नियंत्रण त्यांच्याच हाती आहे.

जड व चेतन सृष्टीची उत्पत्ती, स्थिती व प्रलय हा नित्यक्रम एकसारखा चालू आहे, तो परमेश्वराच्याच आज्ञेने! हा नियम जगाच्या कानाकोपऱ्यात चोहीकडे एकसारखाच आहे. भगवंताने मानव व प्राणिमात्राच्या कल्याणासाठी ही सारी सृष्टी रचना केली आणि त्यांच्या ज्ञानासाठी व जगण्यासाठी वेदज्ञान दिले आहे.

म्हणून मानवाने परमेश्वराच्या त्या सम्यक् व्यवस्थेला व वेदज्ञानाला जाणण्याचा आणि त्यांचे पालन करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. ईश्वरीय तत्त्वांप्रमाणे चालत राहिल्याने जीवन खऱ्या अर्थाने सुखी बनते. त्यांच्या या स्थूल व सूक्ष्म सृष्टि व्यवस्थेला जाणून जो कोणी त्यांच्या आज्ञेत राहतो, त्याचे रक्षण होते व तो नानाविध संकटांपासून वाचतो. पण जो ईश्वरीय आज्ञेचे पालन करीत नाही व त्याच्या व्यवस्थेला भंग करण्याचा प्रयत्न करतो, तो नेहमीच दुःखात सापडतो. म्हणून त्या महान व निराकार प्रभु परमेश्वराच्या दिव्य शक्तीचे उपकार मानने व कृतज्ञता बाळगणे हे मानवाचे परमकर्तव्य आहे.

— स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती(हरिश्चंद्र गुरुजी)





## राजर्षी शाहू जयंती (२६ जून) विशेष - शाहू महाराज आणि वेदोक्त प्रकरण

- प्राचार्य देवदत्त तुंगार

\* वेदोक्त की पुराणोक्त ?

**कोल्हापुर नरेश छत्रपती शाहू** महाराजांबद्दल बोलतांना किंवा लिहितांना ते आर्यसमाजी होते की, सत्यशोधक समाजाचे होते? असा प्रश्न अनेकांना पडतो. पण ते आर्यसमाजीच होते, हे मी गेल्या ४०-५० वर्षांपासून ठासून सांगतोय व लिहितोय ! सत्यशोधक समाज व इतर परिवर्तनवादी समाजसुधारक संस्थांना महाराजांनी मदत केली आहे, पण स्वतः त्यांनीच 'मी आर्यसमाजी आहे', असे लिहिले आहे व आर्यसमाजाच्या संमेलनांचे अध्यक्षपद भूषवून 'महर्षी दयानंद सरस्वती यांचे आपण शिष्य आहोत आणि वेदांवर आपली अत्यंत निष्ठा आहे', असे सांगितले आहे. नांदेडचे दोन विचारवंत प्रा.नरहर कुरुंदकर आणि प्रा.शेषराव मोरे यांनीही 'शाहू महाराज आर्य समाजीच होते', असे लिहिले आहे. सुप्रीम कोर्टाचे आणि हायकोर्टाचे वकील माझे घनिष्ठ आर्यसमाजी मित्र डॉ.शिवाजीराव शिंदे यांनी 'राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्यसमाज' हे पुस्तक लिहिले असून त्यात सर्व पुरावे दिले आहेत.

शाहू महाराज निष्ठावान आर्यसमाजी असल्याने वेदनिष्ठ होते. महाराज आणि वेदोक्त प्रकरणामुळे महाराष्ट्राचे सार्वजनिक जीवन एकेकाळी ढवळून निघाले. या वादामध्ये लोकमान्य टिळकांनी व 'केसरी' ने शाहू महाराजांच्या विरोधी भूमिका घेतल्याने वाद अधिकच चिघळला आणि महाराष्ट्रातील ब्राह्मण-ब्राह्मणेंतर वादाला जास्तच धार चढली. यासंबंधीची घटना अशी पडली की, राजारामशास्त्री भागवत हे प्रकांड पंडित व विद्वान गृहस्थ कोल्हापूरला महाराजांना भेटण्यास गेले. महाराज त्यावेळी पंचगंगा नदीवर स्नानासाठी गेले असता महाराजांचे पुरोहित राजोपाध्ये मंत्र पठन करीत होते. ते मंत्र वेदांमधले नव्हते. शाहू महाराजांना जेव्हा समजले की, ते स्नान करतांना राजोपाध्ये वेदमंत्राऐवजी दुसरेच मंत्र म्हणत होते, तेव्हा त्यांनी त्यांना जाब विचारला, तेव्हा राजोपाध्ये (पुरोहित) यांनी आपणांस (शाहू महाराजांना व मराठा समाजाला) वेदाचा अधिकार नाही, असे स्पष्टीकरण दिले, तेव्हा शाहू महाराज म्हणाले, 'मी क्षत्रिय आहे. माझ्या घाटगे घराण्याला व बहुजन समाजाला 'वेदोक्ता'चा अधिकार आहे व तुम्ही जर हे मान्य केले



नाही, तर तुम्हाला देण्यात येणारे वर्षासन (वेतन दरवर्षी त्याकाळी २० हजार रुपये) बंद केले जाईल!'. पण पुरोहिताने आपला दुराग्रही हट्ट सोडला नाही व नाईलाजाने महाराजांनी पुरोहिताचे वर्षासन (वेतन) बंद केले. त्यामुळे तत्कालीन ब्राह्मण वर्गात प्रचंड असंतोष निर्माण झाला व महाराजांवर टीकेचा भडिमार सुरू झाला. लोकमान्य टिळक व त्यांच्या केसरी वृत्तपत्रानेही शाहूविरोधी व पुरोहिताची बाजू उचलून धरली. लोकमान्यांनी तडजोड म्हणून नंतर सांगितले की, शाहू महाराज हे राजे असल्याने व राजा हा विष्णुचा अवतार असतो. म्हणून महाराजांना 'वेदोक्ताचा' अधिकार आहे. पण घाटगे परिवारास किंवा मराठा समाजास नाही. शाहू महाराजांना हे मान्य होणेच शक्य नव्हते. कारण ते आर्यसमाजी विचारांचे असल्याने वेदांचा अधिकार सर्वांना आहे, यावर त्यांची श्रद्धा होती. महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती आणि त्यांनी १० एप्रिल १८७५ रोजी मुंबई (गिरगाव काकडवाडी) येथे स्थापन केलेल्या आर्यसमाजाने 'वेदज्ञान प्राप्त करण्याचा हक्क केवळ ब्राह्मणांचा नाही, तर सर्व मानवांचा आहे', असे ठाम प्रतिपादन करून सर्वांना ज्ञानाची कवाडे खुली केली.

शाहू महाराजांची वेद, वैदिक संस्कृती, आर्यधर्म म्हणजेच वैदिकधर्म! यावर तरुणपणापासूनच गाढ श्रद्धा होती.

'आर्यधर्म (वैदिक धर्म) हा विश्व-धर्म होईल', असा प्रखर आशावाद महाराजांनी नवसारी व भावनगर येथे झालेल्या आर्य-संमेलनात अध्यक्षपदावरून बोलतांना व्यक्त केला होता.

जानेवारी १९१८ मध्ये कोल्हापूर येथे आर्यसमाज शाखेची स्थापना झाली. कोल्हापूर आर्यसमाजाचे पहिले सेक्रेटरी (आर्यसमाजी भाषेत मंत्री) माझे वडील स्व.हरिसखाराम तुंगार हे होते. आर्यसमाज कोल्हापूरचे अध्यक्ष अर्थात प्रधान हे छत्रपती शाहू महाराजच होते.

महाराष्ट्रात शाहू महाराज आर्यसमाजाचे फार मोठे प्रतिनिधी होते, असे प्रा.कुरुंदकरांनी म्हटले आहे. शाहू महाराजांनी आर्यसमाजाच्या माध्यमातून महाराष्ट्रात पुरोगामी विचार रुजविला. त्यांचे ६ मे १९२२ रोजी मुंबईत दुःखद निधन झाले. ७ मे रोजी दयानंद स्वामी लिखित संस्कारविधीत सांगितल्याप्रमाणे शिवाजी वैदिक विद्यालयाच्या मराठा पुरोहित विद्यार्थ्यांनी त्यांचा अंत्यविधी केला. शाहू महाराजांनी तसे आधीच निर्देश देऊन ठेवले होते. २६ जून रोजी या थोर महापुरुषाची जयंती सर्वत्र साजरी झाली. त्यानिमित्त या महान आर्यसमाजी नेत्याला विनम्र अभिवादन !

— 'निरामय', कला मंदिरामागे,  
वजिराबाद, नांदेड.  
मो.९३७२५४१७७७



# दुरितांपासून दूर राहण्याचे उपाय

— पं. राजवीर शास्त्री

**कोणत्याही देशाचा नागरिक असो** की कुठल्या मत-पंथ व सम्प्रदायाची व्यक्ती असो! आस्तिक असो की नास्तिक असो! सर्वांची अशीच मनोकामना असते की ज्या-ज्या दुःखदायक गोष्टी आहेत, त्या-त्या आपल्यापासून दूरच राहाव्यात आणि ज्या-ज्या सुखदायक गोष्टी आहेत, त्या-त्या आपल्याला प्राप्त व्हाव्यात. याकरिता आस्तिक व्यक्ती प्रेरक प्रभुजवळ अशीच प्रार्थना करते. नास्तिक माणूस प्रार्थना करित ही नसेल, पण तशी अपेक्षा मात्र तो ही उराशी बाळगत असतो, यात शंका नाही. पण केवळ अपेक्षा बाळगल्याने किंवा पोकळ प्रार्थना करण्याने दुःखे कांही जाता जात नाहीत आणि सुख कांही येता येत नाहीत. खरे तर दुःखापासून दूर राहावे लागते. सुख आपल्याकडे येत नसेल, तर आपल्यालाच तिकडे जावे लागते. एका वेदमंत्राच्या माध्यमातून यातील रहस्याला उलगडता येईल.

**विश्वानि देव सविर्दुरितानि परासुव ।**

**यद् भद्रं तन्न आसुव ॥ (यजुर्वेद ३०/३)**

या मंत्रात प्रत्येकाच्या काळजातली भावना व्यक्त झाली आहे. या मंत्रामध्ये 'विश्वानि दुरितानि परासुव।' अर्थात् संपूर्ण दुरिते, सर्व दुःखे आमच्यापासून दूर

होऊ देत आणि 'यद् भद्रं तन्न आसुव।' अर्थात् जे भद्र, कल्याणकारक आहे, ते आमहाला मिळू दे ! एवढाच आशय आहे. पण एवढ्यावरून आपली गाडी पुढे सरकत नाही. यासाठी या मंत्रातील 'दुरितानि' आणि 'भद्रं' या दोन शब्दांवर चिंतन करण्याची गरज आहे. दुरित म्हणजे काय ? त्याचे स्वरूप काय आहे ? त्याला दूर का करावे ? त्याला दूर करण्यासाठी कोणते उपाय आहेत ? तसेच 'भद्रं' विषयी देखील विचार करणे आवश्यक आहे. यासाठी धर्मशास्त्राची मदत घ्यावी लागते. त्याशिवाय हा गुंता सुटत नाही.

महर्षी दयानंदांनी वरील मंत्रावर भाष्य करताना - 'दुरितानि' या शब्दाचा अर्थ-दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुःख, दुष्ट गुण, दुष्ट आचरण, दुष्कर्म असा केला आहे. सायणाचार्यांनी-दुरितम् शब्दाचा अर्थ-'अज्ञानातून निष्पन्न पाप' असा केला आहे. आप्टेकृत शब्दकोशात दुरित या शब्दाचा अर्थ-कठिण, पाप, कुमार्ग असा केला गेला आहे. दुः+इत = दुरित! दुः म्हणजे दुःख आणि इत म्हणजे प्राप्ती यावरून हे लक्षात येते की, ज्या-ज्या कारणाने अथवा कर्मनि परिणामी दुःखाची प्राप्ती होते, त्या-त्या कारणांना वा कर्मांना दुरित मानावे,



त्या-त्या गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थानां दुरित समजावे.

वेदांमध्ये-दुरित, आगस्, एनस्, दुष्कृत, द्रुग्ध, अहंस्, अघ, अघशंस या समानार्थी शब्दांचा खूप वेळा वापर झाला आहे. एकट्या ऋग्वेदामध्ये दुरित शब्द ६० वेळा आला आहे. एकंदरीत ऋषी याज्ञवल्क्य यांच्या म्हणण्यानुसार 'अनंतानि वै दुरितानि!' दुरिते खूप आहेत. त्या सर्वांची गणना करणे शक्य नाही. म्हणूनच त्यांना 'विश्वानि' हे विशेषण लागले आहे. 'विश्वानि दुरितानि' म्हणजे सर्व दुरिते.

अधिभौतिक, अधिदैविक व आध्यात्मिक अशा त्रिविध दुःखातून मुक्त होण्यासाठी दुरितांपासून दूर राहण्याचा इशारा वेदादी शास्त्रांनी दिला आहे आणि तोही पावलोपावली! वारंवार दिला आहे. पण आपण सावध होत नाही. त्यात धर्मशास्त्रांचा काय दोष ? सावध न होणे, जागे न होणे किंवा शास्त्रवचनावर गांभीर्याने विचार न करणे हे ही एक प्रकारचे दुरितच आहे.

आता दुरितांच्या स्वरूपाविषयी जाणून घेऊ या! मनु महाराजांनी काम व क्रोधातून उत्पन्न १८ दोषांचा उल्लेख केला आहे. तो असा - 'शिकार करणे, जुगार खेळणे, दिवसा झोपणे, परनिंदा, अतिसंभोग, मांदक द्रव्याचे सेवन करणे, गाणे, नाचणे, वाजवणे आणि व्यर्थ इकडे-तिकडे भटकणे हे १० व्यसन कामज दोष आहेत आणि चहाडी

करणे, दुःसाहस करणे, द्रोह करणे, ईर्ष्या करणे, दोषारोपण करणे, वाईट कामात धन खर्च करणे, सदा कठोर बोलणे व निर्दोष, निष्पापांना दंड देणे हे आठ व्यसन क्रोधज दोष आहेत. असे मनुस्मृतीच्या ७ व्या अध्यायात म्हटले आहे.

पुढे १२व्या अध्यायात त्यांनी मन-वाणी व शरीराने केल्या जाणाऱ्या अधर्माची, अपराधाची माहिती दिली आहे. ती अशी- 'परद्रव्य हरणाचा विचार करणे, दुसऱ्याचे अनिष्ट चिंतणे व खोटा अभिमान बाळगणे हे तीन मनाचे अधर्म आहेत. सदा कठोर बोलणे, असत्य बोलणे, चहाडी करणे व फालतू बडबड करणे हे चार वाणीचे दोष आहेत. तर हिंसा करणे, व्यभिचार करणे व चोरी करणे हे तीन शरीराद्वारे केले जाणारे पाप आहेत.' यास्काचार्यांनी पुढील ७ पातकांची चर्चा केली आहे.

१) चोरी करणे, २) परस्त्रीगमन ३) ब्रह्महत्या-अर्थात वेदविरुद्ध आचरण करणे, ज्ञान प्रचार कार्यात अडथळा आणणे, विद्वान-ज्ञानी, महापुरुष, संत योगी, ऋषी महर्षी यांना छळणे व त्यांची हत्या करणे इत्यादी. ४) भ्रूण हत्या-गर्भपात, नवजात बालकांचा वध करणे आणि विश्वासघात करणे, ५) सुरापान करणे, ६) तीच चूक पुन्हा-पुन्हा करणे, ७) केलेल्या चुकांवर पांघरुण घालणे.



वेदांमध्येही 'यद्देवादेवहेऽनं।' (यजु.२०/१४) मध्ये माता-पिता व आचार्यगणांचा अनादर करणे व अग्नी, वायू, जल व पृथ्वी या जड देवतांच्या अनुचित प्रयोगाला पाप(अपराध) मानले आहे. 'यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि।' (यजु.१०/१५) यामध्ये उशीरापर्यंत जागणे, आळशी, प्रमादी व अकर्मण्यवादी बनून दिवस वाया घालविणे यालाही अपराध म्हंटले आहे आणि 'बद्ध ग्रामे यदरण्ये...' (यजु.२०/१७) यामध्ये नागरिकशास्त्राचे कायदे व नियमांचे उल्लंघन करणे याला ग्रामविषयक अपराध म्हंटले आहे अकारण वृक्षाची तोड करणे, नवीन झाडे न लावणे हा अरण्यविषयक अपराध आहे. सभा-सत्संगांमध्ये वक्त्यांच्या वक्तव्यांकडे लक्ष न देणे, आपसांत गप्पा मारणे, गोंधळ करणे, बसल्याजागी डुलक्या घेणे, सत्याचे समर्थन न करणे हा सभावविषयक अपराध आहे. डोळ्याने वाईट दृश्य पाहणे, कानाने वाईट ऐकणे, मनाने वाईट चिंतणे, वगैरे हे इंद्रियविषयक अपराध आहेत. शूद्रांना तुच्छतेची वागणूक देणे. त्यांच्यासाठी अपशब्दाचा प्रयोग करणे, हा शूद्रविषयक अपराध आहे. स्वामी अर्थात मालकाच्या आज्ञेचे पालन न करणे, त्यांच्या पाठीमागे त्यांची निंदा करणे वगैरे स्वामी विषयक पाप आहे, दुकानदाराची उधारी न देणे हे वैश्यविषयक पाप आहे. एखाद्याच्या अधिकारात हस्तक्षेप करणे हा ही अपराध

आहे. 'देवकृतस्यैनसो...' (यजु.८/१३) मध्ये देवकृत, मनुष्यकृत, पितृकृत व आत्मकृत या पापांचा उल्लेख आहे.

१) देवकृत पाप - ईश्वराला न मानने किंवा ईश्वराला साकार मानून त्याची मूर्ती बनवून त्याची मनमानी पूजा करणे, पंचमहायज्ञ न करणे वगैरे. देवकृत पाप आहे.

२) मनुष्यकृत पाप - सदाचार, सद्विचार, सद्आहार व सद्ब्यवहार हाच मानवतेचा धर्म आहे. पण अज्ञान, स्वार्थ, प्रतिष्ठा यामुळे मनुष्य माणुसकी सोडून वागतो. ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, बेईमानी, लबाडी, अभक्षभक्षण यांचा आश्रय घेतो. माणसा-माणसांतील सख्य व ऐक्य यांचे तीन-तेरा करतो. एकंदरीत समाजकंटक बनणे म्हणजे मनुष्यकृत पाप करणे होय.

३) पितृकृत पाप- जीवंत आई-वडिलांची, थोरां-मोठ्यांची दररोज श्रद्धापूर्वक सेवा शुश्रूषा केली जाते. यासाठी शास्त्रकारांनी पितृयज्ञ व अतिथी यज्ञाची व्यवस्था दिली. पण ती व्यवस्था जुगारून देऊन जीवंत आई-वडिलांना वा थोरा-मोठ्यांना त्रास देणे, छळणे, मारणे व मेल्यावर त्यांच्या नावे श्राद्ध घालणे हे पितृकृत पाप आहे.

४) आत्मकृत पाप - आत्म्याचा आवाज न ऐकता, आत्म्याच्या आवाजाविरुद्ध कार्य करणे. अर्थात



आत्महनन करणे, म्हणजे आत्मकृत पाप आहे. माणसाच्या मनात नसतांनाही त्याला कोण जबरदस्तीने पापाचरणाकडे प्रवृत्त करतो ? या अर्जुनाच्या प्रश्नाला उत्तर देतांना यागेश्वर श्रीकृष्ण म्हणतात-

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः।  
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह  
वैरिणम्॥ (गीता ३/३७)

रजोगुणापासून उत्पन्न झालेले महाअप्पलपोटे, महाअधाशी, महापापी असे काम आणि क्रोध आहेत. (हेच मनुष्याला पापाकडे घेऊन जातात.) यांनाच आपले वैरी जाणावे । तसेच गीतेच्या १६/२१ श्लोकातही म्हंटले आहे-‘काम, क्रोध व लोभ हे आत्म्याला नष्ट करणारे नरकाचे द्वार आहेत. यामुळे या तिघांचा त्याग करायला हवा !’

एवढ्यावरून दुरिताचे स्वरूप आपल्या नक्कीच लक्षात आले असेलच! पाप, अपराध, दुष्टकर्म, दुष्ट व्यवहार, दुराचार, दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुरुपयोग, मर्यादाभंग, हिंसा, चोरी, ईर्ष्या, द्वेष, अनैतिकता, गैरवर्तन, अज्ञान, अन्याय, शोषण, असत्य, अधर्म अशा अनेक गोष्टी ‘दुरित’ या कोटीत येतात.

न्यायदर्शनकारांनी सुखाच्या कल्याणाच्या वाटेवरील अडथळ्यांना दुरित म्हणजेच दुःख म्हंटले आहे आणि या

अडथळ्यांच्या बाधक तत्वांना व बाधक घटकांना दूर करणे यालाच भद्र (अप्रवर्ग) प्राप्ती म्हंटले आहे.

‘बाधनालक्षणार्थ दुःखम् ।  
तदत्यन्तविमोक्षो अपवर्गः।’ सुखाच्या, भद्रतेच्या मार्गावरील अडथळ्यांना, दुरितांना नामशेष करण्याचा उपायही शास्त्रात सांगितला आहे. मनुस्मृतीमध्ये महर्षी मनु महाराजांनी ५ उपाय सांगितले आहेत-

ख्यापनेनाऽनुतापेन तपसाऽध्ययनेन च।  
पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि॥  
(मनुस्मृति ११/१८)

१) ख्यापन - आपल्या हातून झालेली चूक अथवा घडलेला अपराध झाकून न ठेवता, तो चारचौघात उघड करणे. यामुळे मन हलके-हलके होते. अपराध स्वीकार करायला व जाहीर करायला हिंमत लागते. अपराध स्वीकारणे व जाहीर करण्यातून त्या व्यक्तीची आत्मग्लानी व्यक्त होते व ‘पुन्हा अशी चूक घडू नये, मी अशी चूक करणार नाही’ असा निश्चय असेल तर नक्कीच त्यात सुधारणा होते. जसे साप कात सोडून देऊन ताजातवाना होतो, तशी ती व्यक्तीही पापवृत्तीपासून मुक्त होते. त्याचे जीवन निर्मळ बनू लागते. अपराधाच्या स्वीकृती व प्रसिद्धीमुळे लोकलज्जेचे सुरक्षाकवच त्याच्याभोवती निर्माण होते. अपराधापासून



त्याचा आपोआप बचाव होतो. याउलट बेशरम व उर्मट व्यक्तीही अपराध स्वीकार करते व ते जाहीरही करते. त्याचे जीवन सुधारणे कदापी शक्य नाही.

२) अनुताप - जी व्यक्ती ईश्वराच्या न्यायव्यवस्थेवर, कर्मफळ सिद्धान्तावर व पुनर्जन्मावर विश्वास ठेवते, ती एकतर चुका करित नाही. अन् चुकून कांही अनिष्ट घडलेच तर त्याला पश्चाताप होतो आणि प्रायश्चित्त अर्थात् पापापासून चित्तशुद्धीसाठी ती उद्गीथ प्राणायाम, गायत्री मंत्राचा जाप, विशेष वैदिक सूक्तांचे पठण, यज्ञ व दानाचे अनुष्ठान करते. त्यामुळे भविष्यात आपल्या हातून कसलाच अपराध, पाप घडता कामा नये, याबाबतीत ती व्यक्ती सावध असते.

३) तप - तापणे, ऊर्ध्वगामी बनणे, गतिमान होणे, सशक्त व सक्षम बनणे यालाच 'तप' असे म्हणतात. कुठल्याही त्रासाला, तापाला, परिश्रम व कष्टाला तप म्हटले जात नाही. फक्त धर्माचरण किंवा धर्मकार्य करतांना सोसावा लागणारा ताप किंवा त्रास आणि धर्म पालनासाठी घ्यावे लागणारे कष्ट व परिश्रम यालाच 'तप' असे नाव आहे. ज्याच्याकडे तप नाही, तो धार्मिक असू शकत नाही. मनु महाराजांनी सांगितलेल्या धर्माच्या दहा लक्षणांचा तोच अंगिकार करू शकतो, ज्याच्या अंगी तप करायची तयारी आहे. तप नसेल तर त्याचे

पतन होणे निश्चित आहे. याशिवाय मन आणि इंद्रियाच्या संयमालाही परम तप म्हटले आहे. मन व इंद्रियांवर विजय मिळविण्यासाठी प्राणायाम हा परम सहाय्यक आहे. ज्याप्रमाणे सोने-चांदी वगैरे धातू अग्नीच्या तापाने शुद्ध व निर्मळ होतात. त्याप्रमाणे इंद्रियांचे दोष प्राणायामाने दग्ध होतात. प्राणायाम करण्याने राग, द्वेष, मद, मात्सर्य वगैरे दोष दूर होतात आणि मनाची चंचलता दूर होते. मग हे मन परमात्म्याच्या ठायी रमायला लागते. कामवासना व पापभावना दूर होतात.

४) वेदाध्ययन - वेदाध्ययनामुळेही पापभावना नष्ट होतात. मनु महाराज म्हणतात - 'जसा अग्नी आपल्या निकटच्या लाकडाला जाळून भस्म करतो, त्याप्रमाणे वेदज्ञ माणूस आपल्या ज्ञानाग्नीने येणाऱ्या पापभावनेला जाळून टाकतो.'

वेदाविषयी संत ज्ञानेश्वर माऊलीने म्हटले आहे - 'पै अहितापासूनि काढिती । हित देऊनी वाढविती। नाही गा श्रुती परौती । माऊली जगा।।'

'स्तुतामया वरदा वेदमाता' या मंत्रातही म्हटले आहे - 'वेद ही एक वरदायिनी माता आहे. या वेदमातेच्या स्वाध्यायाने मनुष्याला द्विजत्व प्राप्त होते. पवित्रता, दीर्घायुष्य, बळ, सुसंतान, पशुधन, कीर्ती, धनसंपदा व ब्रह्मज्ञान या गोष्टी प्राप्त



होतात.' एवढेच नव्हे तर वेदाध्ययन करणारी व्यक्ती मुक्ती प्राप्त करण्यास योग्य बनते. वेदाच्या ज्ञानानेच दुःखातून मुक्त होता येते. याशिवाय दुसरा पर्याय नाही.' म्हणून उपनिषदकारांनी - 'एक वेळ सर्व कामे सोडून द्या, पण वेदस्वाध्याय कधीही सोडू नका. स्वाध्यायात कधी प्रमाद करू नका!' असे मानवमात्रास बजावले आहे.

५) आपद्ग्रस्त दशेत दान करणे - आपत्तींनी घेरले असता त्या स्थितीत दान करावे. त्यामुळे पाप भावना नष्ट होते, असे मनुस्मृती सांगते. संकटावर संकटे कोसळू लागली की, माणसांची मस्ती उतरते. तो भानावर येतो. मग त्याला देव-धर्म आठवू

लागतो. दान-पुण्य करण्याकडे त्याचा कल झुकतो. हे ही तसे थोडकेच ! ज्या वेळेला सद्भावना प्रभावित होते, त्या वेळेला पाप-भावना आपोआप निस्तेज होते.

या उपायांमुळे दुरितांना परास्त करता येते व जीवनाला पवित्र, प्रसन्न व प्रशंसनीय बनवता येते. या वरील साधनांनी केलेल्या पापकर्माच्या दुःखद फळांना सहन करण्याची तीव्र क्षमता अंगी येते. त्याला सामोरे जाण्याची मानसिकता दृढ होते. एवढेच !

-आर्यसमाज, कस्तुरबा मार्केट,  
सोलापूर मो.१८२२१९००११

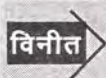


महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्यसमाज परली द्वारा संचालित,  
**श्रद्धानंद गुरुकुल महाविद्यालय, परली-वै.**

**\* प्रवेश सूचना \***

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित 'स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय' में दि. १५ जून २०१६ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि.मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्य विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्य पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। अतः अपने बच्चों को सुसंस्कारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावे।

**सम्पर्क - आचार्य प्रवीण (८८५५०८०६३२) विज्ञानमुनि**



**जुगलकिशोर  
लोहिया  
(प्रधान)**

**(९९७५३७५७९१)  
उग्रसेन राठौर  
(मंत्री)**

**प्रभुलाल गोहिल  
(कोषाध्यक्ष)**

आर्य समाज, परली-वैजनाथ जि.बीड



# गुंजोटी ऋणनिर्देश पुस्तिकेतील चुकीची दुरुस्ती

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभेअंतर्गत आर्यसमाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समितीच्या वतीने गुंजोटीच्या आर्यसमाजाची नवी वास्तू दीड वर्षांपूर्वी बांधण्यात आली. रीतसर उद्घाटन कार्यक्रम नोव्हें.२०१४ ला पार पडला. नंतर समितीच्या वतीने दानदात्यांची ऋणनिर्देश पुस्तिका प्रकाशित करण्यात आली. सदरील ऋणनिर्देश पुस्तिकेत अनावधानाने कांही दानदात्यांचे नामोल्लेख झाले नाहीत. या चुकीबद्दल समिती खालील दानदात्यांची दिलगिरी व्यक्त करते.

१) श्री मल्लीकार्जुनअप्पा आद्रव्याप्पा बिराजदार यांनी रु.२१०००/- (रु.एकवीस हजार) चे दान दिले असून त्यांची पावती क्र.१००७ ही आहे. समितीकडे ही रक्कम जमा झाली आहे. पण नजरचुकीने ऋणनिर्देश पुस्तिकेतील दानदात्यांच्या यादीत त्यांचे नावच छापले गेले नाही. याबद्दल समिती श्री बिराजदार यांकडे क्षमायाचना करते.

२) पं.प्रियदत्तजी शास्त्री यांनी हरियाणातून एका चॅरिटेबल ट्रस्टकडे आर्थिक मदतीची याचना केली. क्र.५३२ ची पावती फाडण्यात आली. पण त्यावर रक्कमेचा आकडा लिहिला नाही व रक्कम पण दिली नाही. तेव्हा पं.प्रियदत्तजींनी स्वतःकडून ११ रुपये टाकून पावतीचा हिशोब पूर्ण केला. पण ऋणनिर्देश पुस्तिकेत या पावतीचा रु.११ चा उल्लेख छापला गेला नाही. या चुकीबद्दल समितीकडून क्षमायाचना!

३) एका दानदात्याने दिलेल्या आश्वासनाप्रमाणे जीर्णोद्धार समितीच्या खात्यात थेट रु.७००१/- चे दान जमा केले. आमच्या धनसंग्राहकाने त्याचे नावाची पावती फाडली नाही. यामुळे दानाची ही रक्कम कोणाची आहे ? हे लक्षात आले नसल्याने ऋणनिर्देश पुस्तिकेतील यादीत या रक्कमेचा व दानदात्यांचा उल्लेख झाला नाही. ऑडिट व बँकेच्या हिशोबात ही बाबत लक्षात आली. नंतर समितीने ही निनावी रक्कम म्हणून जमा खर्चासाठी पावती फाडली. पण दानदात्यांच्या सूचीमध्ये हा उल्लेख करता आला नाही. याबद्दल समितीस खेद वाटतो. दानदाते मंडळींकडून परोपकाराच्या भावनेतून मोठ्या उदार अंतःकरणाने दान दिले जाते. म्हणून आम्ही त्यांच्या विश्वासास पात्र राहू इच्छितो. 'अर्थशुचिता' हे तत्त्व घेऊनच महाराष्ट्र आर्य सभा व आर्य समाज काम करते आणि हेच आमचे खरे मूलभूत भांडवल आहे. म्हणूनच आम्ही वरील बाबी निदर्शनास आणून देत आहोत. वरील दानदात्यांकडे झालेल्या या चुकीबद्दल क्षमायाचना!

काशिनाथ कदरे (मंत्री)

डॉ.ब्रह्ममुनि (उपाध्यक्ष)

आर्यसमाज गुंजोटी जिर्णोद्धार समिती, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा



स्थापना दिनी परळीत प्राचार्य तुंगार यांचे विचार

‘विशुद्ध वैदिक तत्त्वज्ञानाचा अंगिकारून स्वामी दयानंदांचे शिष्यत्व ग्रहण करणारे व आर्य समाजाचा वैचारिक वारसा जोपासणारे राजर्षी शाहु महाराज हे देशातील पहिले आर्यसमाजी संस्थानिक होते’ असे प्रतिपादन प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजात १४२ वा स्थापना दिवस साजरा करण्यात आला. त्याप्रसंगी प्रमुख वक्ते म्हणून श्री तुंगार बोलत होते. अध्यक्षस्थानी संस्थेचे सचिव श्री उग्रसेन राठौर होते. तर व्यासपीठावर प्रांतीय सभेचे अध्यक्ष डॉ. ब्रह्ममुनी, अमृतमुनिजी आदी उपस्थित होते. आपल्या अभ्यासपूर्ण व मौलिक व्याख्यानात श्री तुंगार यांनी आर्य समाजाच्या विचार व कामगिरीवर प्रकाश टाकला. ते म्हणाले, ‘छत्रपती राजर्षी शाहु महाराज हे स्वामी दयानंद सरस्वती यांच्या विशुद्ध वैदिक विचारांचे पुरस्कर्ते होते. आपल्या कोल्हापूर संस्थानात सुधारणा व विकास घडवून आणण्यासाठी त्यांनी आर्य समाजाच्या प्रगतीशील विचारांचा आधार घेतला. तलाठी व प्राथमिक शिक्षक यांसारख्या पदांसाठी त्यांनी इच्छुक उमेदवारांकरिता स्वामी दयानंदकृत ‘सत्यार्थ प्रकाश’ ग्रंथाची परीक्षा उत्तीर्ण होणे, हे सरकारी आदेशान्वये

सक्तीचे केले होते. तसेच आपल्या सर्व शिक्षण संस्था या देखील आर्य समाजाकडे चालविण्यास दिल्या होत्या. एवढेच नव्हे तर आर्य समाजाच्या प्रेरणेनेच बहुजनांकरिता वेदज्ञानाची दारे खुली करण्याचे ऐतिहासिक कार्य शाहु महाराजांनी केले. असे असतांना छत्रपती शाहुंना केवळ सत्यशोधक चळवळीचे अनुयायी म्हणणे संयुक्तिक ठरत नाही, असे निःसंदिग्ध विचार देखील प्राचार्य तुंगार यांनी मांडले. यावेळी डॉ. ब्रह्ममुनी यांनी आर्य समाजाच्या कार्यपद्धतीवर प्रकाश टाकला. तर अध्यक्षीय समारोपात श्री उग्रसेन राठौर यांनी आर्य समाजाच्या प्रचाराची आवश्यकता व्यक्त केली. डॉ. वीरेंद्र शास्त्री यांनी भजन सादर केले.

दरम्यान प्रारंभी पं. प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली पार पडलेल्या विशेष यज्ञात श्री हरिप्रसाद दोडिया व श्री रमेश भंडारी हे सपत्नीक यजमान सहभागी झाले.

कार्यक्रमास सर्वश्री देविदासराव कावरे, सुभाष नानेकर, डॉ. मधुसूदन काळे, गोवर्धन चाटे, जयपाल लाहोटी, शहाजी केंद्रे, विजयप्रसाद अवस्थी, रंगनाथ तिवार, रामनाथ सारडा, जयकिशोर दोडिया, वसंतराव गुट्टे उपस्थित होते. प्रास्ताविक लक्ष्मणराव आर्य यांनी तर सूत्रसंचलन डॉ. नयनकुमार आचार्य यांनी केले.



# वैश्विक शांततेसाठी मानवी मूल्यांची गरज

कर्मयोगी स्व.रामपालजी स्मृतीव्याख्यानमालेत विचारवंत डॉ.वाघमारे

समाज व राष्ट्राच्या व्यापक विकासाची बीजे मूल्यसंवर्धनात दडली असून जगात शांतता व सुखसमृद्धी नांदण्यासाठी मानवीय मूल्यांना आत्मसात करणे गरजेचे आहे, असे प्रतिपादन ज्येष्ठ विचारवंत व माजी खासदार डॉ.जे.एम.वाघमारे यांनी केले.

परळी येथील दानशूर सामाजिक कार्यकर्ते, कर्मयोगी स्व.रामपाल लोहिया यांच्या प्रथम स्मृतिदिनाचे औचित्य साधून आयोजित स्मृतिव्याख्यानमालेचे पहिले पुष्प गुंफतांना प्रमुख व्याख्याते म्हणून डॉ.वाघमारे बोलत होते. अध्यक्षस्थानी माजी आ.सुरेश जेथलिया होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून ज्येष्ठ कवी व साहित्यिक प्रा.मधू जामकर, प्रांतीय आर्य समाजाचे अध्यक्ष डॉ.ब्रह्ममुनी काळे, वैदिक विद्वान पं.राजवीर शास्त्री, प्रा.ओमप्रकाश होळीकर हे उपस्थित होते. दरम्यान संयोजक श्री जुगलकिशोर लोहिया यांनी आपल्या वडिलांच्या स्मरणार्थ २५ लाख रुपयांचा निधी उभारून त्याद्वारे सामान्य जनता व विद्यार्थ्यांच्या नवनिर्मितीसाठी समाजोपयोगी ट्रस्ट स्थापन करण्याचा मनोदय व्यक्त केला.

आपल्या अभ्यासपूर्ण व्याख्यानात डॉ.वाघमारे यांनी स्व.रामपालजींच्या

समाजोपयोगी व परोपकारी कार्याचा गौरव करून मूल्याधिष्ठित समाजरचनेच्या नवनिर्मितीसाठी त्यांचे कार्य उपयुक्त व नव्या पिढीसाठी प्रेरक असल्याचे सांगितले. 'समाज व जीवनमूल्य' या विषयावर बोलतांना ते म्हणाले - 'एकविसाव्या शतकात मानवाने यांत्रिकीकरणाच्या आधारे झपाट्याने प्रचंड भौतिक प्रगती साधली. वैज्ञानिक संशोधनामुळे सारे जग ज्वळत आले. पण माणूस माणसांपासून व माणूसकीपासून दुरावत चालला आहे. परिणामी वर्ण, धर्म व जाती-जातीला संघर्ष प्रचंड प्रमाणात वाढत आहे. दहशतवाद, भ्रष्टाचार, अनाचार, व्यक्तीद्वेष आदी गोष्टी बळावत आहेत. हे सर्व संपवायचे असेल तर मानवाने मूल्यांवर आधारित विचार व संस्कृतीचा आश्रय घ्यावयास हवा. तरच खऱ्या अर्थाने शाश्वत सुख व शांतता नांदू शकेल.'

या प्रसंगी सर्वश्री प्रा.जामकर, डॉ.ब्रह्ममुनी, प्रा.होळीकर आदींनीही आपल्या भाषणांतून रामपालजींच्या कार्याचा गौरव केला, तर अध्यक्षीय भाषणात माजी आ.जेथलिया यांनी स्व.लोहिया यांचे जीवन प्रेरणाप्रद असल्याचे सांगितले. प्रास्ताविकातून श्री



जुगलकिशोर लोहिया यांनी आपल्या वडिलांचा आठवणींना उजाळा देत पित्याचा वैचारिक वारसा चालविण्याचा मनोदय व्यक्त केला. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचलन प्रा.अरुण चव्हाण यांनी केले. तर आभार लक्ष्मणराव हुलगुंडे यांनी मानले. कार्यक्रमास श्रोते

मोठ्या संख्येने उपस्थित होते. तत्पूर्वी सकाळी पं.राजवीर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली स्मृतिथज्ञ संपन्न झाला. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी आयोजन समितीच्या सदस्यांनी व लोहिया परिवाराने प्रयत्न केले.

## लातूरत आंतरजातीय विवाह मेळावा संपन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेअंतर्गत आंतरजातीय विवाहमंडळाच्या वतीने दि.५ जून रोजी लातूर येथील रामनगर आर्यसमाज सभागृहात आंतरजातीय विवाह मेळावा उत्साहात संपन्न झाला. मानवनिर्मित जाती व मत-पंथांची बोथट बंधने जुगारून वेदादी शास्त्रांनुसार गुण, कर्म, स्वभाववैशिष्ट्ये व विचारांना आधार मानून स्वेच्छेने विवाह करू इच्छिणाऱ्या युवक-युवतींना व त्यांच्या आई-वडिलांना या मेळाव्यात आमंत्रित करण्यात आले होते. अशा युवती व युवकांची या कार्यक्रमात संख्या कमी असली तरी पालकांची संख्या मात्र अडीचशे पेक्षा जास्त होती. सकाळी ११ वा. सुरु झालेला हा मेळावा दुपारी ४ वाजेपर्यंत चालला. आंतरजातीय विवाहमंडळाचे अध्यक्ष श्री माणिकरावजी भोसले यांच्या अध्यक्षतेखाली सुरु झालेल्या या मेळाव्याचे उद्घाटन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपप्रधान श्री राजेंद्र दिवे यांच्या हस्ते झाले. याप्रसंगी प्रमुख पाहुणे म्हणून हिंदी कवी व

शायर श्री सुरेशगिर सागर उपस्थित होते.

यावेळी वरील मान्यवरांनी आपल्या भाषणातून दिवसेंदिवस बळकट होत चाललेल्या जाती-धर्माच्या परंपरेला नेस्तनाबूत करण्यासाठी वेदांनी सांगितलेल्या ज्ञान-विचार व सदगुणांवर आधारित चातुर्वर्ण्यव्यवस्थेचा पुरस्कार करण्याचे आवाहन केले. अनैतिक मार्गाचा अवलंब करीत सैराट मार्गाने जातिव्यवस्था कदापी नष्ट होणार नाही, त्याउलट त्याचे घातक असे दुष्परिणाम मात्र समोर येतात. त्यासाठी परस्पर सहमतीने व विचारांना आधार मानून जुळवून(नियोजित) पद्धतीने केलेले विवाह टिकतात व त्यांचे परिणामही चांगलेच दिसून येतात, असेही ते म्हणाले. यावेळी रामनगर आर्यसमाजाचे मंत्री ज्ञानकुमार आर्य यांनी प्रास्ताविक केले. मंडळाचे पदाधिकारी सर्वश्री अनंत लोखंडे, श्रावण चिद्री, रामेश्वर राऊत, पद्माकर लोखंडे आदींनी मेळाव्याच्या यशस्वीतेसाठी प्रयत्न केले.

\*\*\*



## गोसंवर्धन कृषी सेवा आयुर्वेद कंपनीचे उद्घाटन

परभणी येथील आर्य कार्यकर्ते श्री बाबुराव आर्य यांनी मोठ्या परिश्रमातून आयुर्वेद व निसर्गोपचार पद्धतीतून संशोधित केलेल्या बी-बियाणे व पिकांसाठीच्या गोसंवर्धन कृषी आयुर्वेद प्रा.लि. कंपनीचे उद्घाटन दि.९ मे २०१६ रोजी संपन्न झाले.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी श्री भास्करराव देवडे हे तर प्रमुख पाहुणे म्हणून कृषी विद्यापीठाचे अधिष्ठाता डॉ.सत्वधर, प्रो.डॉ.मोरे, श्रीमती अंजली बाबर आदी होते.या कंपनीतर्फे काढण्यात आलेल्या शिवसंजीवनी या औषधाने पिकांवर नैसर्गिक फवारणी केली जाते, तर सीडॅक हे औषध बीजप्रक्रियेसाठी उपयुक्त आहे. यामुळे शेतकऱ्यांना विषमुक्त शेती करता येते व कमीत कमी खर्चात जास्तीत जास्त उत्पादन करता येते. गोमुत्र, शेळीमुत्र, औषधी वनस्पतींचा अर्क व काढा बनवून त्याद्वारे

वरील औषधी तयार केली जाते. याचा लाभ आजपर्यंत हजारो शेतकऱ्यांना झाला असून परभणीच्या कृषी विद्यापीठाने सन २०१० साली आपल्या संशोधन प्रयोगशाळेत परीक्षण करून यास पेटेंट मिळवून दिला आहे. या कंपनीची शासनाच्या औषध विभागाकडेही नोंद झाली आहे.एका धडपडणाऱ्या आर्य कार्यकर्त्याच्या या यशस्वी प्रयत्नामुळे निसर्गोपचार व आयुर्वेदाचा प्रचार व प्रसार घेऊन नैसर्गिक शेतीचे प्रमाण वाढण्यास मदत होईल. एका अर्थाने हा आर्यसमाजाचा गौरव आहे. श्री बाबुराव आर्य यांनी आपल्या या कार्ययशाचे श्रेय म.दयानंद व आर्यसमाजास दिले आहे. कार्यक्रमास आर्यसमाज परभणीचे पदाधिकारी उपस्थित होते. प्रास्ताविक दयानंद आर्य यांनी तर सूत्रसंचलन श्री दिगंबर देवकते यांनी केले.

## संभाजीनगरात 'सामूहिक कन्या उपनयन संस्कार'

वेदकाळापासूनच मातृशक्ती म्हणून गौरवास पात्र असलेल्या स्त्रियांना अलीकडील काळात वेदज्ञानापासून वंचित ठेवण्यात आले. उपनयन सारख्या पवित्र व्रतबंध संस्कारापासून ही दूर ठेवले गेले. पण १९व्या शतकातील महान वेदोद्धारक महर्षी दयानंद यांनी 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः' या

वेदवचनाचा ठोस पुरावा सादर करून मुली व स्त्रियांना उपनयन(मौजीबंधन) संस्कारासह वेदपठनाचा अधिकार बहाल केला. या मान्यतेचा जाहीर स्वीकार करण्याच्या उद्देशाने संभाजीनगर (औरंगाबाद) येथील गारखेडा परिसरातील आर्यसमाजाच्या वतीने सामूहिक स्वरूपात कन्या उपनयन संस्कार कार्यक्रमाचे



आयोजन होत आहे. येत्या १७ ऑगस्ट २०१६ रोजी होणाऱ्या या जाहीर कन्या उपनयन संस्कार सोहळ्याचे पौरोहित्य वाराणसी (काशी) येथील पाणिनी कन्या गुरुकुलाच्या आचार्या डॉ.नंदिता शास्त्री या करणार आहेत. या कार्यक्रमात मानवनिर्मित सर्व जाती व मत-पंथांची बंधने जुगारून

सर्व स्तरातील मुलींचे विधिवत उपनयन संस्कार केले जातील. तरी आई-वडिलांनी आपल्या मुलींचे उपनयन करण्यासाठी सर्व श्री रमेश ठाकुर -प्रधान (९४२३१७८८०३), डॉ.लक्ष्मण माने (मंत्री), प्रा.रमेश पांडव, सुभाष वेदपाठक (उपप्रधान), पं.माधव शास्त्री यांच्याशी संपर्क साधावा.

## डॉ.नवलकेलेकडून औरादवासियांना मोफत पाणीपुरवठा

दुष्काळाच्या झळा मराठवाड्यातील अनेक शहर व गावांना सोसाव्या लागल्या. पाण्यासाठी दाही दिशा भटकण्याची वेळ सर्वांवर आली. यात उमरगा तालुक्यातील औराद(गुंजोटी) या गावाचाही समावेश होता. पाणी नसल्यामुळे गावकऱ्यांचे फारच हाल झाले. पूज्य हरिश्चंद्रजी गुरुजी (स्वामी श्रद्धानंदजी) याच गावचे भूमिपुत्र असल्याने त्यांच्या अनेक शिष्यांपर्यंत ही वार्ता पोहोचली. तेव्हा औराद आर्य समाजाचे मंत्री श्री राजेंद्र पाटील यांनी पू.गुरुजींचे मुंबईतील दानशूर शिष्य व आर्य उद्योजक सौ.व श्री डॉ.देविदासराव नवलकेले यांच्याकडे पाण्यासाठी मदत करण्याची विनंती केली. तेव्हा आपल्या गुरुभूमीतील नागरिकांना पाणीपुरवठा करण्यासाठी डॉ.नवलकेले दाम्पत्य कोणतेही आडेवेडे न घेता तत्क्षण तयार झाले व एका तासात मदत पाठविण्याचा निर्णय घेतला.

परोपकाराच्या भावनेपोटी त्यांनी

पावसाळा येईपर्यंत दररोज एक टँकर औराद वासीयांना देण्याचे सहर्ष मान्य केले. त्याप्रमाणे आजपर्यंत रु.२,५१,०००/-ची मदत पाठवून मोफत पाणीव्यवस्था केली. डॉ.नवलकेले यांच्यामुळे औरादकरांची पाण्याची चिंता दूर झाली. सर्वांना पाणी मिळाल्याने गावकऱ्यांनी त्यांचे मनोमन आभार मानून कृतज्ञता व्यक्त केली. या परोपकारी व सामाजिक कार्याबद्दल आर्यसमाज औरादचे प्रधान श्री जितेंद्र सूर्यवंशी, मंत्री राजेंद्र पाटील आदींसह प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेने सौ.व श्री डॉ.नवलकेले यांचे अभिनंदन केले आहे.

त्याचबरोबर लंडन येथील वेदप्रचारक व औरादचे भूमिपुत्र डॉ.रामचंद्र पाटील (शास्त्री) व समस्त पाटील परिवाराने आपल्या गावातील सर्व लोक व मुक्या जनावरांसाठी जवळपास रु.१ लाख ९१हजाराचे मोफत पाणीवाटप केले. त्याबद्दल पाटील कुटुंबाचे देखील अभिनंदन!



औराद(गुंजोटी) ता.उमरगा येथील आर्य समाजी घराण्यातील कार्यकर्ते व कळंब येथील प्रा.श्री विठ्ठल किशनराव जाधव यांचे दि.२७ जून २०१६ रोजी अल्पकालीन आजाराने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ५६ वर्षे वयाचे होते.

त्यांच्या मागे पत्नी, मुलगी, भाऊ असा परिवार आहे. प्रा.जाधव हे गेल्या ३-४ वर्षांपासून आजारी होते. कळंब येथील शिक्षण महर्षी ज्ञानदेव मोहेकर

महाविद्यालयात रसायनशास्त्र विषयाचे प्राध्यापक म्हणून ते अध्यापनरत होते. त्यांचे वडील स्व.श्री किशनराव जाधव यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेतला होता. प्रांतीय आर्यसभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी व काळे कुटुंबियांशी त्यांचे जिह्वाळ्याचे संबंध होते. दिवंगत श्री जाधव यांच्या पार्थिवावर औराद येथे पं.गुणवंतराव पाटील व पं.रघुरामजी गायकवाड यांनी वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार पार पाडले.

## सेवाभावी आर्य स्वा.सै. श्री सुरावार कालवश

शहापूर ता.देगलूर येथील वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ते, हैद्राबाद मुक्ती लढ्यातील स्वातंत्र्यसैनिक व सेवाभावी प्रतिष्ठित आर्यसमाजी श्री मारुतीराव नरसिंगराव सुरावार यांचे दि.२१ मे २०१६ रोजी सकाळी ८ वा. नांदेड येथे वृद्धापकाळाने निधन झाले. ते ८८ वर्ष वयाचे होते.

त्यांचे मागे पत्नी शारदाबाई, मुलगा श्री धोंडिबा, दोन मुली, सून, जावई, नातू-नात असा परिवार आहे. शहापूर गाव परिसरात सेवाभावी, मितभाषी, कष्टाळू, निरभिमानी, आर्यसमाजी म्हणून श्री सुरावार यांची ओळख होती. आर्यसमाजाच्या प्रेरणेने त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेतला होता. आर्यसमाजाच्या जडण-घडणीतही त्यांचे

मोलाचे योगदान होते. एखादे वैदिक धर्म प्रचारक आले की, ते त्यांचा आदरातिथ्य करीत असत. गावात त्यांचे किराणा व मेडिकलचे दुकान होते. खादी वस्त्रांचे ते पुरस्कर्ते होते. साध्या राहणीवर त्यांचा भर होता. अगदी सुरवातीपासूनच त्यांनी कष्टातून दिवस काढले. एकत्र कुटुंब पद्धतीचा पुरस्कार केला. आपल्या मुला-मुलींसोबतच आपले पुतणे श्री सुरेश यांच्यावरही त्यांनी पित्याची छत्रछाया दिली व सर्व कुटुंबियांनाच सुसंस्कारित केले. दिवंगत स्वा.सै.सुरावार यांच्या पार्थिवावर पं.अनिल माखणे यांच्या पौरोहित्याखाली शहापूर गावी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

**वरील दोन्ही दिवंगतांना महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेतर्फे श्रद्धांजली!**



॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय

जीवन मूल्यों को

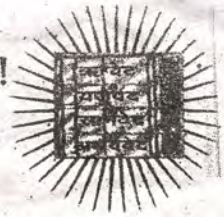
जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

**महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

(पंजीयन-एच. 333/र.बं.६/टी.इ. (७)२६७/२०४९.

स्थापना ५ मार्च १९७७)



**\* मानवकल्याणकारी उपक्रम \***

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौख- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि)
- महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा. निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता



## पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ की झलकियाँ



उदगीर के  
पर्जन्यवृष्टि यज्ञ में  
सपत्नीक आहुतियाँ  
प्रदान करते हुए  
प्रा.डॉ.नरेन्द्रजी  
शिंदे, श्री सुबोध  
अंबेसंगे व  
श्री हंगरगे।

सम्भाजीनगर में  
पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ की  
पूर्णाहुति करते हुए  
सांसद श्री चंद्रकांतजी  
खैरे, बसैये परिवार एवं  
जोगेन्द्रसिंह चौहान  
आदि।



माजलगाव में  
पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ के  
अवसरपर विचार  
व्यक्त करते हुए  
प्रा.लक्ष्मीकांतजी  
शास्त्री (सोन्नर) तथा  
मंचपर विविध  
मान्यवर।



## लोहिया स्मृतिसमारोह

परली में आयोजित  
स्व. रामपालजी  
लोहिया स्मृति  
समारोह में व्याख्यान  
देते हुए  
डॉ. जे. एम. वाघमारे।  
मंच पर अन्य  
मान्यवर।



## पुरोहित शिविर, हैदराबाद

शिविर के समापन  
समारोह में  
मार्गदर्शन करते हुए  
आचार्य पं. नरेन्द्रजी।  
साथ में श्री  
सुभाषजी आष्टीकर,  
मारुतीरावजी एवं  
श्री तिरुमन्नाजी।

## प्रतिदिन १२ घण्टे का अग्निहोत्र

आर्य वानप्रस्थाश्रम,  
रोजड (गुजरात) में  
प्रतिदिन १२ घण्टे  
निरंतर चलनेवाला  
अग्निहोत्र करते हुए  
साधक, ब्रह्मचारी  
एवं माताएँ।





# आर्य समाज गांधी चौक, लाहूर का वार्षिकोत्सव



वैदिक विषय पर  
व्याख्यान देते हुए  
आर्यविद्वान  
डॉ. दीनदयालजी  
वेदालंकार।

भजन प्रस्तुत करते  
हुए पं. भूपेन्द्रसिंहजी  
आर्य एवं  
पं. लेखरामजी  
आर्य।



स्थापना  
दिवस

परली में आयोजित  
आर्यसमाज स्थापना  
दिवस पर मार्गदर्शन  
करते हुए प्राचार्य श्री  
देवदत्तजी तुंगार।



परिवारों के प्रति जगहों निष्ठा  
शुद्धता एवं गुणवत्ता, करोड़ों  
परिवारों का विश्वास, यह है  
एम.डी.एच. का इतिहास जो  
पिछले ९० वर्षों से हर कसौटी  
पर खरे उतरे हैं - जिन्होंने कोई  
विकल्प नहीं। श्री हाथी हैं  
आपकी सेहत के रखवाले



**लाजवाब खाना !  
एम.डी.एच. मसाले  
हैं ना !**



**मसाले  
असली मसाले  
सब-सब**



ESTD 1919

**MAHASHIAN DI HATTI LTD.**

Regd. Office : MDH House,  
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,  
Ph. : 25939609, 25937987  
Fax : 011-25927710  
E-mail : mdhltd@snl.net  
Website : www.mdhspices.com

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह  
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त

**महाशय धर्मपालजी**



REG.No. MAHBIL/2007/7493 \*Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,  
श्री \_\_\_\_\_

प्रेषक -

**मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,**

आर्य समाज, परली वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में  
आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ाने में कार्यरतपर आदर्श आर्य दम्पती

**श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य**

(प्रसिद्ध भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

**सौ.करुणादेवी आर्या**

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राली, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गोस्व में 'वैदिक गर्जना' मासिक का स्वीन मुखपृष्ठ सन्नेह भेंट !



जीरेत  
शरदः  
शतम् ।